मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख सलंग अंक १४९ सितम्बर-२०१९

जलझीलणी एकादशी

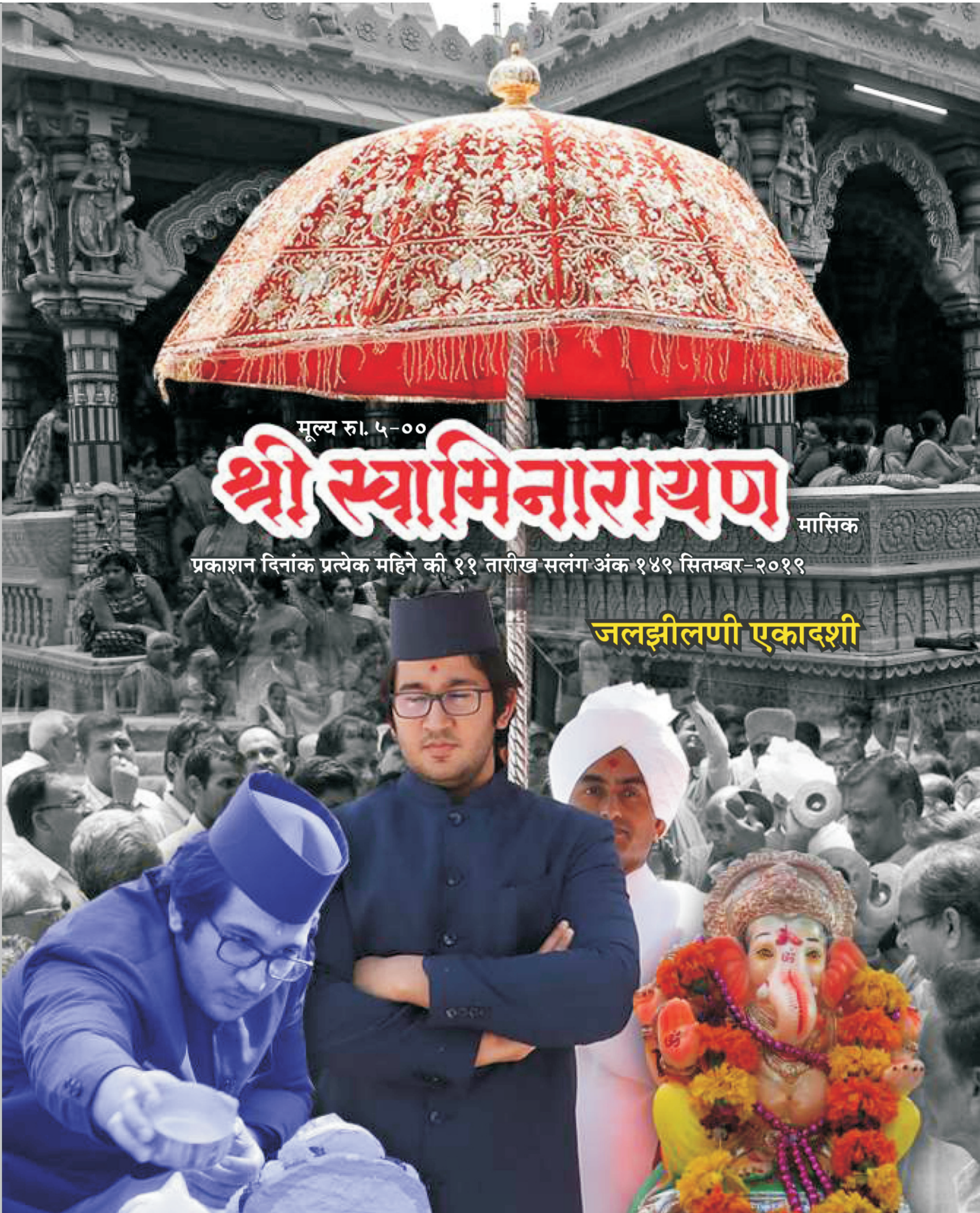

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

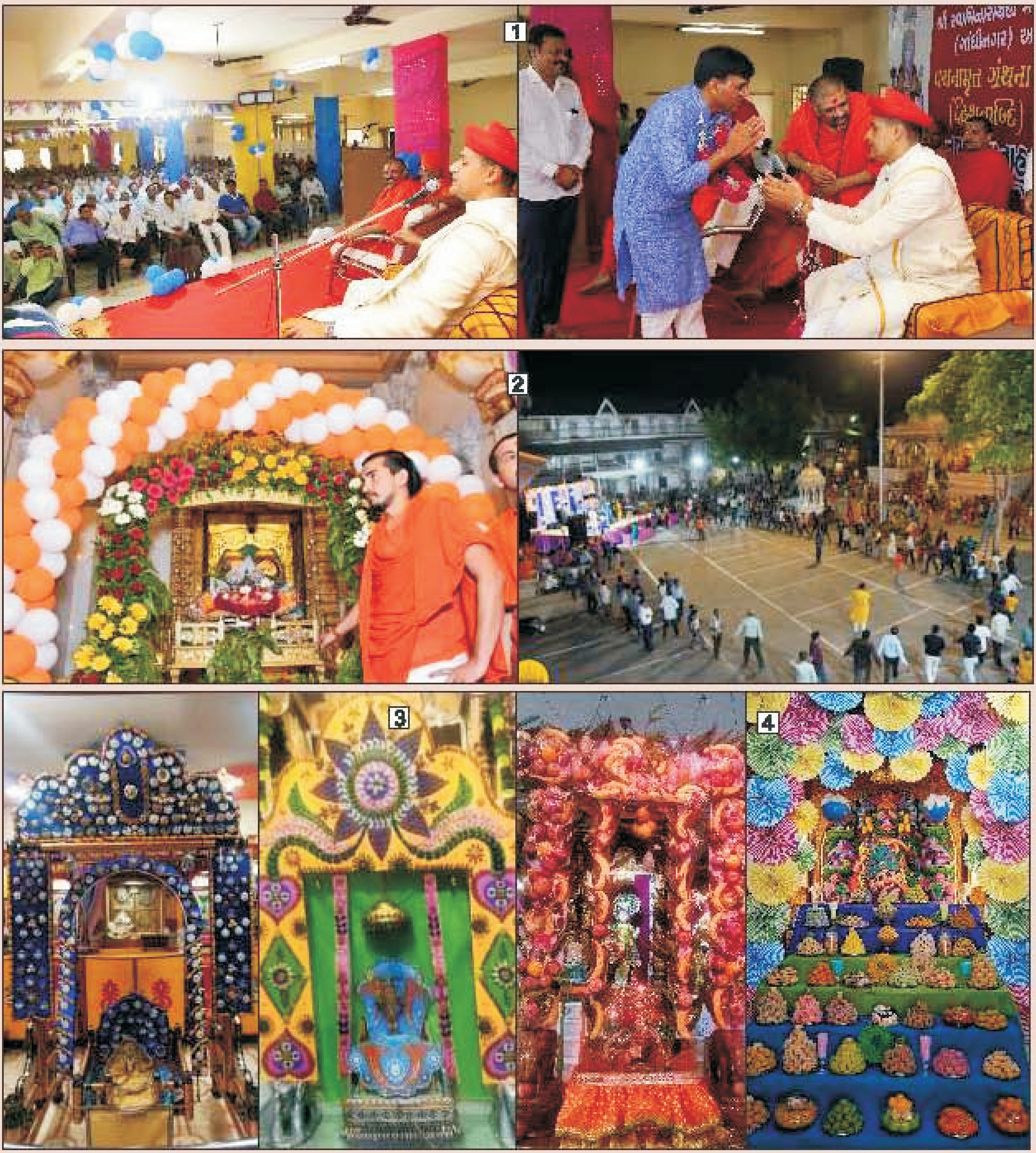

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (सेक्टर-२) में वचनामृत द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में वचनामृत की रात्रि पारायण में सभा में तथा मंत्रीश्री मनसुखभाई मांडवीया को आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री। (२) अपने कालुपुर मंदिर में जन्माष्टमी को ठाकुरजी को पारणा में झूलाने तथा मंदिर के प्रांगण में रासोत्सव और कीर्तन भक्ति करते संत हरिभक्त (३) दहेगाम, जेतलपुर (वहनोका) और माणसा मंदिर में हिंडोला दर्शन। (४) न्यु राणीप मंदिर में हनुमानजी के समक्ष अन्नकूट दर्शन।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १३ ● अंक : १४९

सितम्बर-२०१९

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत
स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ८२३८००१६६६
मो. ९०९९०९८९६९
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	आचमन	०६
०४.	श्रीहरि के दिव्य १०८ नाम	०८
०५.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन	१२
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१६
०७.	सत्संग बालवाटिका	१८
०८.	भक्ति सुधा	२१
०९.	सत्संग समाचार	२४

अस्मदीयम्

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवानने अधिक कृपा करके हमारे पूरे देश में अच्छी वर्षा किये है । हमारा देश कृषि प्रधान देश है । इसलिये जितना कृषि मे उत्पादन होगा । उतना ही विकास दर पर प्रभाव पडेगा । सम्पूर्ण विश्व में भूगर्भ जल का स्तर कम होता जा रहा है । यह एक चिंता की बात है । पूरे विश्व में जल की बरबादी अधिक की जा रही है । हम अपने घर में स्वयं इसका पालन करेगे तो निश्चित परिणाम प्राप्त होगा । पानी के बिना जीवन सम्भव नही है । हम सभी हरिभक्त पानी की बरबादी न करे । उस पर विशेष ध्यान दे ।

श्रावण महीने में झूला दर्शन, जलझीलणी तथा श्री गणपति का वरघोडा का दर्शन, विजय दशमी का प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का जन्मोत्सव और दिवाली का त्यौहार आयेगा । आप श्रीहरि द्वारा स्थापित देव का दर्शन करके जीव को बल मिलता है ।

हम लोगो को ऐसे सर्वोपरि श्रीहरि मिले है । इसलिये अपनी भाग्य की कोई सीमा नही है । अपने श्रीनगर अहमदाबाद में श्रीहरि स्वरुप ऐसे परम कृपालु श्री नरनारायणदेव स्थापित है । तब से यह शहर और इस शहर में रहने वाली प्रजा अधिक सुखी हुई है । लेकिन श्रीजी के शिक्षापत्री अनुसार दशांस और वीसवाँ भाग धर्मादा के लिये अवश्य निकाले । देव है और देव को ही देना है । उस में अपना कुछ नही यह समझकर धर्मादा अवश्य दे । इससे अपना यश और मंगल होगा ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की

रुपरेखा

(अगस्त-२०१९)

१०	गज्जर राजेन्द्रकुमार बाबूभाई के यहाँ आगमन - नारणपुरा।
१४-२१	श्री स्वामिनारायण मंदिर सास्काटोन (केनेडा) मूर्ति प्रतिष्ठा अवसर पर आगमन।
३१	श्री स्वामिनारायण मंदिर जयपुर पंचदशाब्दी पाटोत्सव अवसर पर और बाल मंडल के स्वर्ण जयंती महोत्सव के अवसर पर आगमन।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अगस्त-२०१९)

१६ से १८	श्री स्वामिनारायण मंदिर डेट्रोईट (अमेरिका) १५ वाँ पाटोत्सव अवसर पर आगमन।
२५	चराडवा गाँव में युवा सत्संग सभा स्वयं की अध्यक्षता में पूर्ण करवाना।

आचमन

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

हमारे भारतीय सनातन वैदिक और पौराणिक परम्परा में पूजाविधिपूजाकर्म, यज्ञकर्म, व्रत, जप, तप, दान, स्थान, तीर्थ, संध्या, पाठ, परश्चरण, श्रवण, कीर्तन, अर्चन, संस्कार जो नित्य का निमित्त प्रसंग के लिये दीर्धकालीन या अल्पकालीन इत्यादि सत्कर्म प्रारम्भ करने से पहले सर्व प्रथम तीन बार जल के द्वारा आचमन किया जाता है । हमारे ऋषियोने जल के द्वारा आचमन करके शरीर और मन को शुद्ध करने के आशय से आचमन विधितैयार किये है । कोई भी सत्कर्म करने से पहले मनुष्य की आन्तरिक, बाह्य, मानसिक, कायिक शुद्धि करना अधिक आवश्यक होता है । प्रारब्धऔर किये गये कर्मो से बधा हुआ मानव रात-दिन अनेक अपवित्र कार्य स्थूल सूक्ष्म देह के द्वारा करता रहता है । जो साहजिक कारण है । देव कर्म करने से पूर्व शरीर पवित्र होने पर देव की सेवा का अधिकार मिलता है । और वह देव आप के द्वारा की जाने वाली पूजा को स्वीकार करते है । तब वह देव कर्म से जुडता है । मन शुद्ध करने की विधिअर्थात् आचमन, बाह्य और अन्दर की शूचिता अर्थात् आचमन ।

अपने ईष्टदेव भगवान श्री सहजानंद स्वामी ने शिक्षापत्री श्लोक नं. ५१ में अपने हाथों से लिया है कि ''प्रातःकाल स्नान करके शुद्ध आसन को पृथ्वी पर बिछाकर पूर्व मुख या उत्तर मुख करके बैठकर आचमन करना चाहिए ।'' प्रातः काल की नित्यविधिकरने से पहले हमारे आश्रितो को आचमन करना चाहिए । ऐसी आज्ञा किये है ।

आचमन कैसे करना चाहिए ? उसका शास्त्रोक्त विधिवैज्ञानिक महत्व क्या है । आचमन करने से कितना प्रभाव पडता है । न करने पर क्या हानि होती है । उन विषयो को सभी हरिभक्तो सत्संग प्रेमी साधको को रहस्य का ज्ञान देना आवश्यक है । वर्तमान समय में आदमी के पास समयाभाव श्रद्धा भक्ति का अभाव होने से ऐसी छोटी क्रिया को भूलते जा रहे है । क्योकि पात्र शुद्ध किये बगैरे उत्तम कक्षा के पदार्थ, वस्तु, उस में रखा जाय तो पात्र दोष के कारण अपवित्र हो जाता है । अर्थात् आचमन किये बिना सभी कर्म विधि-विधान असफल हो जाते है । आचमन करने वाला देव तुल्य बनकर देव सेवा का अधिकारी बनता है ।

आचमन करने की विधिमें कहा जाता है । सर्व प्रथम श्रीजी महाराज के वचनानुसार आचमन आसन पर बैठकर करना चाहिए । वह भी पूरव मुख करके या उत्तर मुख की तरफ बैठकर करना चाहिए । कई संयोगो में जैसे कि नदी, तालाब का जल प्रवाह में स्नान, तप, जप करना हो तो खडे रहकर आचमन कर सकते है । पवित्र आचमन पर बैठकर दाहिनी हाथ को जाँधके रखकर बाये हाथ के द्वारा आचमनी द्वारा दाहिने हाथ की हथेली में जल लेना चाहिए । हाथ की हतेली देवतीर्थ – ब्रह्मतीर्थ होने से पवित्र स्थान है । उसमें जल रखने की विधिकही गयी है । हमारे हाथ में समस्त देवता का निवास होता है । अंगुठे के मूल में ब्रह्मतीर्थ और कनिष्ठा अंगलु के मूल में प्रजापति तीर्थ मध्य अंगुली के अग्रभाग में समस्त देव अर्थात् देव तीर्थ तथा तर्जनी अंगुली और अंगुठे की बीच बाले भाग में पितृतीर्थ बताया गया है । इसलिये तर्जनी और अंगुठा सीधे

रखकर बाकी की तीन अंगुलिया अपने तरफ मोडकर उसमें जल लेना चाहिए । इस मुद्रा को करतीर्थ, मुखतीर्थ कहा जाता है । इसके बाद कर सरोवर रुपी हतेली में आचमन के द्वारा लिये जल को परब्रह्म परमात्मा केशव भगवान को याद करके बोले ''ॐ केशवाय नमः'' ऐसा कह कर जल को मुख में डाले । पुनः ''ॐ माधवाय नमः'' मंत्र बोलकर जल को पीये । पुनः हाथ में जललेकर ''ॐ गोविंदाय नमः'' ऐसा स्मरण करके हाथ में रहे जल को पात्र में रखे । जल की मात्रा उतनी रखे जो कंठ तक जा सके । जल पेटतक जाय इतना अधिक मात्रा में जल न ले । क्योकि मनुष्य के गले में उसके पूर्व की सात पीढी के पूर्वजो का अंश छिपा रहता है । वह जल गले में जाने पर उस पवित्र जल से शुध्ध होकर पूजा सत्कर्म का पुण्य फल प्राप्त होता है । आचमन करने वाला यजमान और उसके पूर्वज एक साथ शुद्ध और पवित्र होते है । इसमें चार वर्णो का अलग-अलग विधान है । कई शास्त्रो में बताया गया है । ब्राह्मण का आचमन जल कंठ तक, क्षत्रिय का हृदय तक, वैश्य का तालु तक और औरतो के होठ का स्पर्श हो सके उतना होना चाहिए । औरतो को जल कंठ के नीचे नही ले जाना चाहिए । पूर्वकाल में पूजाविधिकी पात्रता और पवित्रता का अधिकार प्राप्त करके मानव की सात पीढी यों को पवित्र करने की उत्तम उपाय की व्यवस्था की है।

वैदिक विधिमें आदिकाल में ''भूर, भूवः स्वः'' ऐसा मंत्र बोलकर आचमन करने की परम्परा है । जो सत्कर्म सम्पूर्ण वेदोक्त हो ऐसे सत्कर्म की शुरुआत में आचमन के समय मंत्र बोला जाता है।

आचमन विधितीन बार की जाती है । क्योकि परमब्रह्म परमात्मा का एक बार भी नाम लेकर - जल पान करे तो भी मानव पवित्र हो जाता है । फिर भी तीन बाद वह 'स्थिरता ध्रुवता, विश्वचयता यज्ञ स्वरुप कहा जाता है । जो त्रिविधशुद्धि, ''कायिक, वाचिक, मानसिक, तीन देह स्थूल, सूक्ष्म और कारम इस कारण से तीन बार आचमन किया जाता है।

आचमन क्रिया में जल का महत्व है । जल के द्वारा ही आचमन होता है । अन्य दूध, पंचामृत, पंचगव्य ऐसे पवित्र पदार्थ पूजा कार्य में आते है । आचमन मात्र जल द्वारा ही किया जाता है । क्योकि जल साक्षात् नारायण के विग्रह में से जल प्रगट हुआ है । और नारा + नारा अर्थात् जल अर्थात् उसमें शयन करना है । इस लिये पमरात्मा को ''नारायण'' कहते है . जो प्रभु नारायण का मंत्र जाप करके आचमन करते है । जो नारायण के पूजा के योग्य हो जाता है । श्रीमद् भागवत महापुराण आदि में कहा गया है । सृष्टि काल में हिरण्य गर्भ भगवान जल के शरण में गये थे । और शेष नारायण की शैया पर श्री नारायण लेट गये । श्री लक्ष्मीजी सेवा में रही है।

शुद्ध होने की पवित्र विधिआचमन विधिकहलाती है । इस लिये पूजा अवसर पर समस्त भक्त इस प्रकार महिमा युक्त आचमन करे । पूजा में यह सामान्य रुप जैसी विधिन करने पर फल नही मिलता है।

कूर्म पुराण के तेरहवे अध्याय में आचमन विधिमें वेदव्यासजी लिखे है । भोजन के बाद, जलपान के बाद नींद से जागने के बाद, केश कर्तन के बाद, सूतक कार्य के बाद, संध्या के समय, स्मशान से आने के बाद, ब्राह्मण को एकबार पुनः आचमन तता अन्य जातियो के स्पर्श वाला भोजन के बाद आचमन करे । अशुद्ध जल से आचमन न करे । पादूका पहनकर आचमन न करे । वर्षा जल से आचमन न करे । आचमन करने के बाद अंगुठा और अनामिका द्वारा दोनो आँखो को नासिका को कान को स्पर्श करना चाहिए । इससे इन्द्रियो खुश होती है।

भगवान वेदव्यास लिखते है । कि तीन बार आचमन करने से ब्रह्मा, विष्णु और महेश खुश होते है । नेत्रो को स्पर्श करने से सूर्य, चंद्र और नासिका स्पर्श करने से देवो के वैद्य अश्विनीकुमारो कर्ण स्पर्श करने से वायु और अग्निदेव, हृदय के स्पर्श से सभी देवता, सिर स्पर्श से, परम पुराण पदम विष्णु भगवान प्रसन्न होते है।

શ્રીહરિના દિવ્ય ૧૦૮ નામો

- શાસ્ત્રી નિર્ગુણદાસ (અમદાવાદ)

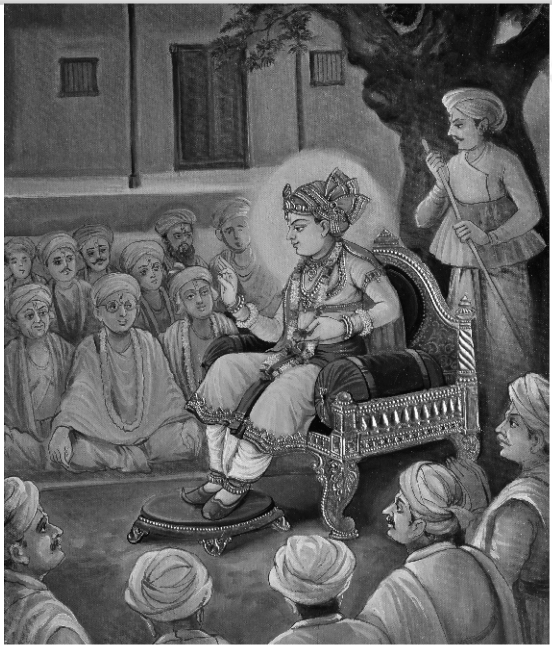

श्रीहरि महिमाष्टकम् ॥

गोविन्द नारायण वासुदेव श्रीकृष्ण संकर्षण पद्मनाभ ।
नरानिरुद्धेश्वर लोकनाथ हरे मुकुन्दादय नमो नमस्ते ॥१॥
आनन्दकंदाच्युत सुंदरागं दयानिधे माधव मंगलात्मन ।
विष्णो हृषिकेश परावरेश प्रद्युम्न पद्मनाभ ते नोऽस्तु ॥२॥
विशुद्धमूर्ते मधुसूदनाज दामोदर श्रीधर सर्ववन्दय ।
ब्रह्मण्यदेवाक्षर पूर्णकाम प्रभो विभो नाथ नमो नमस्ते ॥३॥
वैकुन्ठ सत्योत्तम सत्व भूमन् हिरण्यगर्भ त्रिककुत्क्लेश ।
विश्वोतमश्लोक विधे महर्षे प्राणेश विश्वेश्वर ते नमोऽस्तु ॥४॥
वृषाकपे केशव धर्म धीर शुचिश्रवो भूतपते परात्मन् ।
पुण्यांग यज्ञेष्ट पुण्यकीर्ते सुधीर्नस्ते पुरुषोतमाय ॥५॥
अधोक्षज श्रीकर कंजनेत्र वेदैकविद्वेदकृदव्ययात्मन् ।
अव्यतक्त संश्रित्पर साँख्य हेतो आनंद विद्याधिपते नमोऽस्तु ॥६॥
ज्ञेयादिदेव प्रियभक्त पूज्य प्रेष्ठ प्रजेशासमवर्य सर्व ।
ब्रह्मागुणागम्य सदर्चनीय प्रमाणहीनाधिपते नमोऽस्तु ॥७॥
स्वामिन्मनहेशामलधाम देव ज्ञानप्रदागोचर सद्गुणाप्त ।
सहस्त्रमूर्ते पुरुषाप्तकाम प्रकाशकाकाशवपुनर्मस्ते ॥८॥
स्वतंत्र मायाधिप सर्वशक्ते सदा प्रसन्नो भव पाहि चास्मान् ।
त्वमेव सर्वाश्रयणीय एकस्तस्मै मुहुस्ते भगवन्नमोऽस्तु ॥९॥

परमब्रह्म परमात्मा का शास्त्रो में असंख्य नाम आते है। जिसकी गणना करना मनुष्य के वृद्धि से दूर है । इस कलियुग में मनुष्य शरीर धारण करके प्रगट होकर अपने ईष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण के नाम को नंद संत भी अपने रचना में अनेक स्थानो पर अनेक नाम से सम्बोधन किये है। अनेक नामो का गान भी किये है। सत्संगिजीवन के रचयिता शतानन्द मुनि ने अपने रचना में से भगतो की सरलता के लिये श्रीहरि के एक हजार नामो से अलग सर्वमंगल स्त्रोत की रचना किये थे । जिसका सभी हरिभक्त गान कर सके। उशमें अधिक सरलता के लिये बाद में श्रीहरि के १०८ नामो वाले जनमंगल स्त्रोत दिये थे। जो सम्प्रदाय में अधिक प्रसिद्ध है। इसका गान और पाठ जप सभी हरिभक्त नित्य प्रति करते है । उसी प्रकार शतानन्द मुनि ने सत्संगिजीवन ग्रन्थ में ही भगवान श्रीहरि जो बारबार अनेक जगहो पर बड़े उत्सव करते हुए। उस में भक्तो का बड़ा समूह एकत्र होता था। उसमें से एक समैया मे विक्रम संवत १८७३ फाल्गुन वद-१ को ३ मार्च १८१७ सोमवार के दिन का समैया भगवान श्री नरनारायणदेव के जन्मोत्सव के अवसर पर अधिक मात्रा में वडताल मे मनाया गया था । उस समय विविधजगहो से आने वाले हजारो भक्त संत परमहंस गृहस्थ भाई, बहने सभी एक साथ मिलकर अनेप इष्टदेव प्रभु भगवान श्री स्वामिनारायण के दिव्य और अलौकिक नाम सबके हृदय में खिला यह उनके मुख से निकलपडा। ऐसा सुन्दर स्तोत्र

शतानन्द मुनिने रचकर सबको सरलरुप में दिये थे । वे श्लोक सत्संगिजीवन के तीसरे प्रकरण के अध्याय-५५ श्लोक से १८ से २६ तक है। उस दिव्य और महान नामो को समझने का प्रयत्न करे।

गोविन्द नारायण वासुदेव श्रीकृष्ण संकर्षण पद्मनाभ।
नरानिरुद्धेश्वर लोकनाथ हरे मुकुन्दादय नमो नमस्ते ॥१॥

गोविन्द स्तुति प्रार्थना जिसे वेदो में सूक्त नाम से जानते है। उससे उनका परिचय होता है। प्राप्त कर सकते है। अथवा गो अर्थात् पांच इन्द्रियो के समुदाय जो इन्द्रियो की वृत्तियो को अपने में खिचते है । वे गोविन्द है । अथवा वे भक्त इन्द्रियो वृत्तियो को परमेश्वर स्वरुप से जोडते है। ऐसे गोविन्द परमात्मा है । २. नारायण - नार अर्थात् जल और जल जिसका जीवन है । ऐसे जो मनुष्यो में अयन अर्थात् आधार देने वाले आत्मा के आधार नरकी आत्मा नारायण है। ३. वासुदेव - समस्त विश्व में व्याप्त है। वासुदेव जिसको वेदोने ईशावस्यम्य मिद से गान करते है। वे वासुदेव है। ४. श्रीकृष्ण - कषतिति कृष्ण जो जीव मात्र के मन प्राण इन्द्रियो को अपने में खीचे वे कृष्ण अर्थात् जिसका नाम मार्कन्डेय महामुनिने कृष्ण रखा था। वे अति सुन्दर विशिष्ट कृष्ण है । ५. संकर्षण - इस युग में मनुष्य शरीर धारण करके अनपे आश्रितो को जन्म-मृत्यु की वासना को हराकर दुख काटे वे संकर्षण है । ६. चन्द्रनाभ - अपने भक्तो के हृदय कमल में निवास करके या जिसकी नाभि कमल की तरह है । वे पद्रमनाभ है । ७. नर - जो सदैव पुरुषाकृति में है । जो सदैव सबके नेता - नायक है । ८. अनिरुद्ध - जिसके रंग रुप की सीमा न हो स्वतन्त्र हो वे अनिरुद्ध है। ९. ईश्वर - परमब्रह्म परमात्मा जो सभी के ईष्ट है सभी के नियन्ता है । १०. लोकनाथ - सभी जीवो के नाश हेतु नियन्ता है। ११. हरि - सभी के कष्टो को दूर करे। मार्कन्डेय मुनिने जिनका नाम हरि रखे है । १२. मुकुन्द - अपने भक्तो को मोक्ष दे वे मुकुन्द है । १३. आदय - जो सबसे पहला हो, और मध्य में भी हो अनन्त कोटि ब्रह्मांड की उत्पत्ति के पहले के हो । मध्य और अन्त में भी रहे वे आदय है। ऐसे स्वामिनारायण भगवान आप के चरणो में हम सभी वंदना करते है।(१)

आनन्दकंदाच्युत सुंदरागं दयानिधे माधव मंगलात्मन।
विष्णो हृषिकेश परावरेश प्रद्युम्न पद्मनाभ ते नोऽस्तु ॥२॥

१४. आनंदकंद - आनंद के मूल है। १५. अच्युत - जिसका कोई अंश नही जो कभी चलायमान नही होते वे अच्युत है। १६. सुन्दरांग - विजके सभी अंग हाथ, पैर, नाक, कान ईत्यादि अति सुंदर है वे सुन्दरांग है । १७. दयानिधि- जीवो के उपर दाय करुणा के सागर है। १८. माधव - जगत के जीव का पोषण करते है। ब्रह्म विद्या के आश्रय है वे माधव है। १९. मंगलात्मा - जिसके अंतर में रहते है। उसका हर जगह मंगल होता है। २०. विष्णु - जगत में हर जगह व्याप्त रहकर क्षर-अक्षर पर्यन्त सभी का नियन्तण करते है वे विष्णु है। २१. हृषिकेश - पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ और चार अन्तकरण के समूह हो हृषिक कहते है। उसके ईश या नियता है। वे हृषिकेश है । २२. परावरेश - जो जीवो के द्वारा जाने न जा सके वे परावर है। २३. पद्युम्न - जो सभी को प्रकाश देते हे। वे प्रद्युम्न है । २४. पद्मनाभ - जिसका मुख कमल जैसा सुंदर और कोमल है वे पद्मनाभ ऐसे है । परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण भगवान आप के चरणो में हम सभी वंदना करते है।(२)

विशुद्धमूर्ते मधुसूदनाज दामोदर श्रीधर सर्ववन्दय।
ब्रह्मण्यदेवाक्षर पूर्णकाम प्रभो विभो नाथ नमो नमस्ते ॥३॥

२५. विशुद्धमूर्ते - सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण येत्रि गुणमयी शुद्ध और पवित्र है। मानव देह धारी परमात्मा है। विसुध्धमूर्ति है। २६. मधुसुदन - अपने शरण में आये हुए भक्तो के मन, बुद्धि विषयो में मधुरता देकर उसे विषय से दूर करके भगवत स्वरुप से जोडते है

वे मधुसुदन है। २७. अरज – जो हमेशा अजन्मा है फिर भी लीला रुप मानव शरीर धारम करके अपने भक्तो को दर्शन देते है। वे अज है। २८. दामोदर – दम शम से जिसे प्राप्त कर सकते है। सम्पति, शक्ति जिसके उदर मे है वे दामोदर है। २९. श्रीधर – कई प्रकार की शोभा जो धारण कर सके वे श्रीधर है। ३०. सर्वबंद्य – जिसकी मूर्ति पूजा करने से विश्व के सभी देव – दानव मनुष्य वंदन करके मोक्ष प्राप्त करता है। वे सर्व वंद्य है। ३१. ब्रह्मण्यदेव – जो तीन देह जाग्रत, स्वान और सृ.टि से अलग आत्मा रुप होते है। उनहे ब्रह्मरुप कहते है। वे सभी का हित करने वाले है। ३२. अक्षर – जिसे कभी किसी प्रकार की विकृति न आये अक्षर है। अर्थात् क्षय, विकृति न हो वे अक्षर है। ३३. पूर्णकाम जिसके हृदय में कामना न हो वे पूर्ण काम है। ३४. प्रभु स्वसत्ता रुप से स्वयं ऐश्वर्यवान है। वे प्रभु है। ३५. विभुअनंतकोटि ब्रह्मांड में सर्वत्र व्याप्त है। वे सबसे महान है वे विभु है। ३६. नाथ – चेतन – अचेतन सभी के स्वामी है। वे नाथ है। ऐसे स्वामिनारायण भगवान आप के चरणो में हम सभी वंदना करते है।(३)

वैकुन्ठ सत्योत्तम सत्व भूमन् हिरण्यगर्भ त्रिककुत्कलेश।
विश्वोतमश्लोक विधे महर्षे प्राणेश विश्वेश्वर ते नमोऽस्तु ॥४॥

३७. वैकुंठ – कुंठा जिन जीवो की वृद्धि मोक्षमार्ग में संकुचित है। यह कुंडा आश्रय पाने पर समाप्त हो जाती है। अपने भक्तो की कुंठा दूर करके मोक्ष देते है। वह वैकुंठ है। ३८. सत्य – तीन कालो में जो एक समान है वह सत्य है। ३०. उत्तम – सभी में श्रेष्ठ हो। वे उत्तम है। ४० सत्व जगत में सदैव सत्तामात्र है वही सत्व है। ४१. भूमन – जिसके गुण ऐश्वर्य क्रांन्ति न जाना जा सके वे भूमन है। ४२. हिरण्यगर्भ स्वर्ण के समान अति तेजस्वी अप्राकृत धामो के अधिपति वे दाम के मध्य में स्थित है। वे हिरण्यगर्भ है। ४३. त्रिकुल – जिसका तीनो अंगो अति ऊँचा और श्रेष्ठ हो उत्कृष्ट है। ४४. त्रिकुत्त – जिसका तीनो अंगो अति ऊँचा और श्रेष्ठ हो तिकुष्ट है। ४४. क्लेश – सर्व प्रकार की कलाके इश नियन्ता स्वामी अनेक कलाओ के जिसमें ६४ कला १६ कला अडसठ कला ६८ सभी कलाओ के नियन्ता है। वे क्लेश है। ४५. विश्व समस्त विश्व के आधार कर्ता और नियन्ता है। जिस में समस्त जगत सभाहित है। जो समस्त जगत में व्यापक रुप से है। वह विश्व है। ४६. उत्तम श्लोक – विश्व में जो कुछ श्रेष्ठ है जो सब जिसमें समाहित है। उसके सागर है। जीवो के पुण्य सत्कर्मो के सागर है। उत्तम श्लोक है। ४७. विद्ये – वेद सत्य शास्त्रो में जिसे जगत नियन्ता स्वरुप मानते है। जीव, ईश्वर माया अक्षर पर्यन्त सभी के नियन्ता फलगाता है। वे ही विधे है। ४८. महर्षे – ऋषि – मुनियो में महान है। अर्थात् तप ईन्द्रिय दमन करने में समर्थ है। वे ही महर्षे है। ४९. प्राणेश – प्राण सचरण चेतना शक्ति जो समस्त विश्व में है। उसके नियन्ता प्राणेश है। ५०. विश्वेशवर – अनंतकोटि ब्रह्मांडो की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय के कर्ता और नियन्ता है। जो समस्त विश्व में पूजनीय, भजनीय, उपासनीय है। वे विश्वेशवर है। ऐसे भगवान श्री स्वामिनारायण भगवान आप के चरणो में हम सभी वंदना करते है।(४)

वृषाकपे केशव धर्म धीर शुचिश्रवो भूतपते परात्मन्।
पुण्यांग यज्ञेष्ट पुण्यकीर्ते सुधीर्नस्ते पुरुषोतमाय ॥५॥

५१. वृषाकपि – वृष अर्थात् धर्म और उसको धारण करने वाले वे वृषाकपि अथवा धर्मदेव के पुत्र रुप में प्रगट हुए है। वे वृषाकपि है। ५२. केशव – संसार के जीवो के अन्तकरण में अर्न्तयामी स्वरुप रहकर जो नियमन करते है। वे केशव है। ५३. धर्म – सम्पूर्ण संसार को अपने स्वरुप में रखकर जो धर्म के पुत्र प्रगट हुए है। जो धर्म है। ५४. धीर जो सदैव स्थिर रहते है। धैर्यवान है। ५५. शुचिश्रव – जिसके नाम का लीलाचरित्र का गुणगान सभी के कान को पवित्र करता है। वह शुचिश्रव

है । ५६. भूतपति - इस संसार में माया से घिरा है । वह सर्वभूत है । अर्थात् जीव ईश्वर माया और अक्षर भी भूत नाम से जाना जाता है । वे सभी के पति है । नियन्ता है । वे भूपति है । ५७. परमात्मा - जो आत्मा का अर्न्तयामी है। लेकिन आत्मा उन्हे जान नही सकते है । उससे भी परे है। ५८. पुण्यांग - जिसके शरीर का सभी अंग अति दिव्य है। जिसके दर्शन मात्र से जीवो के पुण्य का उदय होता है ।५९. यज्ञ - साक्षात यज्ञ मूर्तिमान है । सभी कर्मो को अपने में स्वााह करते है । वे यज्ञ है । ६०. ईष्टदेव - याचको के मन में आये सभी प्रकार के फल को देते है । वे ईष्टदेव है । ६१. पुण्यकीर्ति - जिसाक यश सर्वत्र गाया जाता है । जिसके चरित्र के गुणगान से पुण्य का उदय होता है । वह पुण्य कीर्ति है । ६२. सुधी - आपके शरण में आये हुए भक्तो का दुख दूर करने में बुद्धिमता है । उत्तम मति वाले है । ६३. पुरुषोत्तम - अनंत कोटि ब्रह्मांड में जितने पुरुष शब्द से कहे जाते है उसमें उत्तम है । वे पुरुषोत्तम है । ऐसे भगवान श्री स्वामिनारायण भगवान आप के चरणो में हम सभी वंदना करते है ।(५)

अधोक्षज श्रीकर कंजनेत्र वेदैकविद्वेदकृदव्ययात्मन्।
अव्यतक्त संश्रित्पर साँख्य हेतो आनंद विद्याधिपते नमोऽस्तु ॥६॥

६४. अधोक्षज - जिसका भजन करने से असंख्य भक्त अक्षरमुक्त को पदवी पाते है । उसमें जरा भी कमी नही आती है । वे अधोक्षज है । ६५. श्रीकर - देने वाले है । इसलिए श्रीकर है । ६६. कंजनेत्र - कमलवत नत्रो वाले है। ६७. वैदेकलित - जिसके रुप जो जानना हो वे वेद ज्ञान स्वरुप है । ६८. वैदकृत - जो ऋगवेद सामवेद, अर्थववेद के नाम से जाने जाते है । वे वेद कृत है । ६९. अव्यात्मा - जिसके रुप में कभी विकार न आये जो नित्म अप्रकृत दित्य है । ७०. अव्यकत, सम्पूर्ण विश्व में अन्तर्यामी रुप में व्याप्कत है । वे अव्यक्त है । ७१. सन् - सत् सदैव श्रेष्ठ है। ७२. चित्पर - जो चेतन तत्व से परे है कोई चेतन तत्व पूर्ण रुप से जान नही सकता है । वे चित्पर है । ७३. सौष्य - जीवो को जहाँ पर भी सुख शांति दिषे । वे सौख्य है । ७४. है तो - जो जीवो को सभी प्रकार के सुख दे । वे है तो है । ७५. आनन्द - जिसके रुप में सब प्रकार के आनंद का वास है । जो आनंद धन है । वे आनन्द है । ७६. विद्यापति - सभी विद्‌यो का ज्ञानी एवम् नियंता है । वे विद्यापति है । ऐसे भगवान श्री स्वामिनारायण के चरणो में वंदना करता हूँ ।(६)

ज्ञेयादिदेव प्रियभक्त पूज्य प्रेष्ठ प्रजेशासमवर्य सर्व ।
ब्रह्मागुणागम्य सदर्चनीय प्रमाणहीनाधिपते नमोऽस्तु ॥७॥

७७. जोय - वेदज्ञान से जानने योग्य है । अकेले है वे जोय है । ७८. आदिदेव - अनंत कोटि ब्रह्मांडो की उत्पत्ति के पहले के है । ये आदि देव है । ७९. प्रियभक्त - जो अपने भक्तो को प्रिय है । वे पिर्य भक्त है । ८०. पूज्य - जीव से लेकर ब्रह्मांडतक सर्व आदरणीय है । वे पूज्य है। ८१. पृष्ठ - प्रिय में अति प्रिय श्रेष्ठ है । ८२. प्रजेश - शरीर धारण करने वाले के नियंता है । वे प्रजेज्ञ है । ८३. अमरवर्य - जो अमर है । मुक्त है । मृत्यु से रहित है । वे अमरवर्य है । ८४. सर्व - जिसका निवास अणु-अणु में है । वे सर्व है । ८५. ब्रह्म - सबसे बड़े और विशाल है । ८६. अगुण- तीनो काल में निगुर्ण है । ८७. अगम्य - किसी साधन से न जाना जा सके मात्र कृपा से जाने जाये । ८८. सदर्यनीय - मुमुक्षुओ में पूजनीय है । ८९. प्रमाणहीन - जिसके यश-प्रताप रुप गुण स्वभाव शक्ति का कोई माफ नही है । ९०. अधिपति - सभी के मालिक है । कोई धनपतिया लक्ष्मीपति भूपति सभी के पति है । ऐसे भगवान श्री स्वामिनारायण भगवान आप के चरणो में हम सभी वंदना करते है ।(७)

स्वामिन्मनहेशामलधाम देव ज्ञानप्रदागोचर सद्‌गुणाप्त ।
सहस्त्रमूर्ते पुरुषाप्तकाम प्रकाशकाकाशवपुनर्मस्ते ॥८॥

९१. स्वामिन - जो सभी जीवो के स्वामी है । वे स्वामीन है . ९२. महेश - सभी भगवान के नियंता है । वे

(पेईज नं. २०)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

कुंडाल (कडी) मंदिर बहनोका) की मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंग कुंडल का इतिहास सभी जानते है। अगल-बगल के गाँवो से आनेवाले हरिभक्त परिचय देते है कि हम इस गाँव के है। हम उस गाँव के है। अन्ततः आप सभी हमारे है। कारण सिंहासन पर विराजमान भगवान इस सभी के आराध्य देव है। अपने बाप है। इसके कारण अपना परिवार बना है। यही भावना सदा करनी है। हम एक दूसरे को नही जानेगे तो हमें कौन पहचानेगा ?

कई बुजुर्गो से समाचार पूछे तो उत्तर मिलता है कि अब कान से सुनाई नही देता है। कम अच्छा ! कुछ सुनने जैसा नही है। कम सुने तो अच्छा। कहावत है कि देखने पर जहर है। सुनने में जहर है। ये कहावत पीढी दर पीढी अनुभव से बनती है। महाराज ने हमे विवेक, बुद्धि रखना सिखाये है। क्या देखे ? क्या न देखे ? क्या सुने ? क्या न सुने ? नही सिखाये है। सुखी बुद्धिवाला किसे कहते है। जिस मनुष्य के पास बुद्धि-विवेक हो । विवेक बुद्धि अर्थात् क्या ? जो ध्यान से सुने, ध्यान से देखे, विचार भी ध्यान से करे। यह बात बहुत उत्तम और सूक्ष्म है। लेकिन यह बात सत्य है। आप सभी का अनुभव होगा। सभी Smart (चालाक) है। कितने विचार आते है। कहाँ-कहाँ तक धुम आये होगे। दुनिया बदल गयी ? क्या नियन्त्रण में है ? लेकिन प्रयत्न किया जा सकता है। यहाँ पर है प्रयास करे पूरा नही तो कुछ प्रगति अवश्य होंगी। प्रयत्न न छोडे। महाराज कहे है कि कायर बनकर त्याग न करे।

हमारी अनुसंशा मानकर मंदिर की सीढीयाँ कम रखे। बड़े माता-पिता बहनो को कष्ट न हो। महाराज अपने को सिखाये है। भजन करना कठिन हो लेकिन सुविधा आवश्यक है। कईबार हम कहते है। भविष्य की पीढी को सीढी चढाने के लिये **Concept** (अवधारणा) बदलनी पडेगे। भावी पीढ़ी भगवान के सामने कैसे आये। संस्कार देने की कठिन समस्या होती जा रही है। आप से इसका उत्तर पूछे तो आप भी तनाव में आ जायेगे। हम सब मिलकर समाधान लाये। माँ या पिता बच्चे या बच्चियो कीं शादी कर देने से अपनी पूरी बात नही बनती है। दूसरी समस्या आ जाती है। चिंता मुक्त कौन है ? सबको चिंतामुक्त होना है। लेकिन होते नही है। दौड-दौडकर थककर बिस्तर में सो जाते है। पैर हिलाये बिना नींद आं जाती है। प्रातः उसी अवस्था में उठ जाते है और कहते है। काफी दिन के बाद अच्छी नींद आयी है। ऐसी नींद प्रतिदिन आये तो। मजदूरी तो यही है। विचार ये करना है कि मात्र मंदिर से जिम्मेदारी पूरी

नही हो जाती है। नरनारायणदेव का दर्शन करने गये है। मात्र प्रदिशणा है । प्रदिक्षणा में बैठकर भी होती है । ओटला पर बैठकर वृद्ध बाते करते है । भगवान के सानिध् यमें बैठना ये महत्वपूर्ण है।

मंदिर में खेलना, भोजन, पहले कहाँ था ? दिन में जलसा करना है। घर में भी भगवान का वातावरण बनाये । एक गाँव में एक वृद्ध छोटे बच्चे को बैठाने के लिये गोद में बैठाता था ? मैं बोला कोई बात नहीं । उसको घर पर छोड आये । बच्चे को साँस लेने दो । क्यो बिचारो की हत्या कर रहे है ? छोटे बच्चे को मंदिर ले आये । बच्चे की पैर छूना सिखाये । क्यों ? मंदिर में बच्चो को सहजता देने का कार्य करे । थोडा विलम्ब होने दे । समझदार होने पर खुद बंद कर देगा । एक जगह पर एक वृद्ध बच्चे को कंठी पहनाने के लिये लाये थे । उसमें से एक लडका बोला मुझे नहीं पहनना है । मैं बच्चे के अधिक खुश हुए । मैं सभा में कहा कि बच्चे के प्रति मेरा सम्मान है । यह क्यो ? मुझे विश्वास है कि वह लडका कभी कंठी धारण करेगा । अपना स्वतंत्र निर्णय लेकर हमेसा कंठी धारण करेगा । और जो पहनकर गये है । मुझे उन पर विश्वास है कि वह कंठी निकालकर खूटी पर टाँगदिये होगे । क्योकि उनका स्वयं का निर्णय नही किये होगे । क्यो कि बड़ोने पहनाया होगा । यह सत्य बात है । महाराज मनुष्यो को स्वतंत्रता दिये है। हम नही दे सकते है।

वचनामृत का ग्रन्थ प्रश्नोत्तरी के उपर है ? महाराज संतो भक्तो को सामने से कहते है थे । प्रश्न करो ? वर्तमान समय में प्रश्न करो तो में उत्तर प्रदान करुगा । शायद कभी मेरे स्थान पर दूसरा होगा तो ऐसा भी हो कि दाहिने हाथ को उठाकर श्राप भी दे दे । नरक में जाओगे । ऐसा प्रश्न कही पूछा जाता है ? यह कोई नही कहेगा कि इसका उत्तर मेरे पास नही है । महाराजने अपने सम्प्रदाय का मूल सिद्धान्त प्रश्नोत्तरी दिये है । महाराज कहे है कि मर्यादा में रहकर सरल-सरल प्रश्न करे । भ्रमित प्रश्न करो ? महाराजने आधी रात को संतो-हरिभक्तो को जगाये है । और सभा किये है । संप्रदाय का वृक्ष वहाँ है । बच्चे अपने बडो को ध्यान से देखते है । बाद में निर्णय करते है । हम अच्छी जगह है या खराब जगह पर भटक गये है ? हमे उन्हे सत्य वातावरण देना पडेगा । सम्प्रदाय और शास्त्र का सिद्धान्त है । बच्चो को ऐसा वातावरण दे ताकि अपना सत्संग फले-फूले ।

यह गाँव ऐतिहासिक और प्रसादी का है । इतिहास आप सब जानते है । संत कला भगत की बात किये होगे । (बात संक्षिप्त में है - कला भगत का स्वयं का केत ले लेने के लिये विरोधीने सरकारी कार्यालय में रिश्वत के माध्यम से अधिकारी को घुस देकर सत्य का सत्यापन कराने के लिये साक्ष्य रुप में रक्त गर्म लोहे की गेंद कला भगत के हाथ से उठवाया था । कला भगत श्रीहरि का स्मरण करके गर्म गोला हाथ में लेकर अपने खेत की सीमा में चले । बाद में गोले को नीचे रख दिये । गरम गेंद नीचे रखते ही घास में आघल ग गयी । लेकिन कला भगत के हाथ नही जले थे । महाराज परीक्षा पास करवाये । तथा अपने भक्त की रक्षा भी किये थे । यह लोहे का गोला आज भी म्यूजियम में (हाल नं. ७) में है। इस गाँव का इतिहास इसके मूल में है । यह बात आज भी लागू होती है । जज हमारी सभा मैं बेठे है । पूछिए कितने प्रतिशत झगडा खेत का, दिवाल का, जगह का जो लिया उसी का हो गया है ? कला भगत गरम लोहे का गोला हाथ में लिये तो विरोधी परेशान हो गया । यदि पाँच कदम हमारे जमीन पर चल देगा तो वह उकी जमीन

हो जायेगी । लेकिन भगवान के भक्त का लक्षण होता है। दूसरे का हम मले । अधिकार से अधिक नही चाहिए । यह मानवता है । तिलक, चांदला, कंठी तो बाद में आही है। इससे पहले मानवता ही थी । इस लिये सम्प्रदाय के मूल में मानवता ही है। महाराज सत्संग में आये उशके २५ वर्ष बाद शिक्षापत्री आई थी । भक्त की चरमसीमा यह होती है। स्वंय की चिंता नही रखते है । भगवान अपने भक्त को खेत, मकान, दुकान, अन्न, धन, वस्त्र सब कुछ देते है । यह उदाहरण अपने लिये है । पूर्णानंद स्वामी हो, ब्रह्मानंद स्वामी हो, नित्यानंद स्वामी हो या दादा खाचर हो या उनका इतिहास हो कथा हो ये सब अपने लिये है। ये मान ले तो यदि झगड़ा हो तो कहना ये बात अच्छी है। आप के ही गाँव के इतिहास में भक्त के लक्षण दिखाये है । उसका बल रखना और परम्परा को वारसाई में देना । वातावरण मिलने पर काफी कुछ हो सकता है।

मंदिर अच्छा है। प्राचीन मूर्ति बगल में है. हम पुराने मूर्तिकी आरती पूजा किये तो अधिक तालीयाँ बजी थी । जो हाजिर थे उन्हे पता होगा । पुरानी मूर्ति को सिंहासन में ही रखेगे इस मूर्ति का मूल्य अरबो से अधिक है। किसी मनुष्य की मानवता खरीदी जा सकती है । अच्छे-अच्छए बिक जाते है । भगवान को भी खरीद लेते है बात छोडे । कुछ वस्तुए खरीद नही सकते है। भगवान आफ को और हमको माने ये अलग बात है । भगवान को कोई खरीद नहीं सकताहै । कुछ लोग ईघर-उधर जायेगे । यह अनुभव है। हम दोनो तरफ फ्रेमींग कर देगे । दुनिया से सुविधा हटती है। सुविधा देने पर दुविधा हटती है। सुविधा की जगह है। इस मंदिर में हमारे बुजुर्गो ने कितने भजन-कीर्तन किये हो तो तब यह मिला है । यह आवश्यक भी है। बहनो की संख्या भाईयो से तीन गुना अधिक है। सत्संग वहाँ से आता है। कला भगत की किसी के गोद में बैठे रहे होगे । केवल धर्मदेव को भक्ति माता न हो तो क्या होगा ? इसलिये दोनो को सिंहासन पर बिराजमान किये है।

मनुष्य बने रहे उसमें भलाई है। सब सरल है। नेता बनना, अभिनेता बनना, गुरु एवम् शिष्य बनना । मानव बन सके है क्या ? अंत में सबको आशीर्वाद प्रदान किये।

कडी नये मंदिर के लाभ हेतु आयोजित कथा का अवसर : मुझे बार-बार कडी आना पडता है। छुटकारा भी नही है। हम लोगो का भगवान के बिना आधार नही है। कडी इस विस्तार का मुख्यालय है। मंदिर के लिये जो धन आया है । ये भले ही कम लगता हो । यह आप के हिसाब से अधिक है। आप लोग एक-एक रुपया पसीने की कमाई का धन दे रहे है। जिसके द्वारा भगवान को लोग पहचान रहे है। अपने सुविधानुसार मंदिर के लिये दान दे रहे है। इससे उच्च विचार संसार में नही हो सकता है। किसी के लिये कुछ करना । अपने लिये तो सभी लोग करते है। यहाँ भगवान के लिये या अपने लिये नही कर रहे है। कोई भी आकर मंदिर में दर्शन करेगा । भगवान मिलेगे । संस्कार सुरक्षित रहेगा यह मानकर, दान देते है। रकम कम या अधिक नही कडी के हिसाब से कम है। मदिर भगवान करते है और पूर्ण भी करेगे । मैं और आप नही कर सकते है। तन, मन और धन से सभी ने सहयोग दिया है । निमित्त कथा का है । कथा किसने करायी ? एक बहन करा रही है। और सम्प्रदाय का सत्संग स्थायी बना रहे । उसके पीछे का कारण ये बच्चिया संस्कार लेकर उस गाँव में गयी है । वहाँ पर मंदिर होता है। संप्रदाय में ९०% मंदिर का निर्माण उन बहनो के कारण हुआ है। अत्याधिक धन्यवाद । कथा का संकल्प होने के कारण यहाँ पर एकत्र हुए है। छोटा-बड़ा सहयोग दिये है

।संकल्प अधुरा है।हम लोग एकत्र हुए है।विचार तो लोगो को काफी आते है। ऐसा होना चाहिए। वैसा हो चाहिए। लेकिन कुछ होता नही है। ये बहने मर्द है। धीर है जो करके दिखा दी है। सत्संग बना रहे। इसके किये मंदिर है। मंदि उठाकर कोई ले जाता नही है। मंदिर का आब जितना उपयोग करेगे। उतना लाभ आप को ही होगा। मंदिर से भगवान छोटे-बडे होते है। भक्त दर्शन करने आये तो भगवान बड़े हो गये ? या कम दर्शनार्थी से छोटे हो गये ? भगवान तो भगवान है। भगवान से जुडने पर अपने बड़े बनते है। इस लिये गाते है। हरि भजता सहु मोटप पामे। वचनामृत में स्पष्ट लिखा है। अनंत लोग हाथ जोडकर हमारे सामने खडे रहते है। चाहे वह राजा हो। महाराज हो, देवता हो इससे हमारा बड़प्पन नही बढता है।

लोग डायरा और महफिल में करोडो रुपये उडा देते है। हमारे मंदिर में तो भगवान विराजमान करना है। मुझे डायारा या महफिल नही करना है। न मुझे उसका अनुभव है। लेकिन एक Clip (क्लिप) को देखे है। उसमें रुपया उडाते है। उसमें किसी का सन्मान या अपमान होता है। वहाँ पर बाद में कहने वाले कहते है कि पैसा लक्ष्मी का रुप है। वहाँ पर तो इतना होता है। हम लोग केवल एक महीने के मोबाईल रिचार्ज को दे तो मंदिर बन जायेगा। सही बात है न ? पैसा नही आप के जुडने की बात है। महाराजने नही लिया ? मंदिर बनाने के लिये क्या भगवान सक्षम नही थे। नंद संत सोने का मंदिर बना दिखे। पत्थर के मंदिर का क्या करना ? तो भी महाराज सोने का मंदिर नही रखे ? पत्थर का मंदिर ही बनाये। बचो ? एक-एक का योगदान मिले ? सीढी पर आये। यह मेरा योगदान है। यह हमारा मंदिर है।

यहाँ पर हिस्से दारी के रुप में मकान मेंनही रहते है। भगवान की कृपा है। सिवाय कुछ लोग रहते है ? मुझे ज्ञात है भाडा के मकान में चूना लगवाना हो तो लोग दस बार विचारते है। होल्डर लडकने पर केवल बल्प बदल दिया जाता है। होल्डर भले ही लटकता रहे। क्योकि भाडा का मकान है। स्वयं का नही है। यही घर अपना रहे और दिवार में फाड फट जाये तो हमे खराब लगता है। सहन कर पायेगे आप ? बिजली का कोई भाग टूट जाता है तो फेवीक्लिक लाकर जोड देते है। ऐसा क्यो ? कि यह मेरा है। यही ज्ञान होना है। सिद्धान्त यही है कि सत्संग में जब भी भगवान, ये संत, हरिभक्त इस मंदिर के (आचार्य सहित धर्मकुल) मेरा है। ऐसा माने तो सभी कथा जीवन में आ गयी। ''ये कचरा छोडकर गया है। मंदिर है। उसका भी ज्ञान नही है।'' ऐसा भी कहने वाले होते है। लेकिन कचरा उठाकर डस्टबिन में डाले। वह सच्चा इंसान है।

संसार को हम नही देखते है ? सगे सम्बन्धी साथ में अबोल रहते है। ऐसा न करे एक हो जाये। यह भी एक संस्कार है ? आयद पूरे जीवन में नही बोले हो और ऐसा समय आये। और विपरीत अवस्था आ जाये तो क्या होगा। कुछ भी हो अपना खून है। इतना याद रखना है। रुपाय कोई-कोई ले ही जायेगा। काम नही भी आये। दो लोग भगवान को जानेगे। मानवता विकसित होगी। अपना कार्य हो जायेगा। इस लिये मंदिर होते है। अल्प खर्च करके जो बचा कर देता है। भगवान यह याद रखते है। ये सत्य है। मुझे आँकडा नही देखना है। मुझे मंदिर देखना है। मंदिर में विराजमान भगवान को देखना है। इस लिये सामान्य मन से कह रहा हूँ। जिसका योगदान बाकी हो अनुपात्र के हिसाब से दे जाये। आप सभी दे ही रहे है। बाकी कठिन है। परंतु खुशी की बात यह है कि आप की भविष्य की पीढी मंदिर में भगवान के सानिध्य में रहकर बडी होगी हारने की ईच्छा भी मैं पूरा कर दूँगा। (सम्प्रदाय के मूलभूत सिद्धान्त अनुसार निर्माणाधीन मंदिर में दिये गये योगदान का क्या महत्व है। उसकी सूझ-समझ प.पू. महाराजश्री के इस आशीर्वचन से आप को ज्ञात हो जायेगा।)

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

सर्वावतारी भगवान श्रीहरिने स्वयं सं. १८८२ को कार्तिक सुद ग्यारस (एकादशी) के दिन स्वामिनारायण संप्रदाय में धर्मवंशी आचार्य पद का स्थापन वडताल में किये और उसके बार में आवश्यक लेख साक्षीयो के हस्ताक्षर सहमति संवत १८८३ में माधसुद-१५ के दिन गढडा में एभल खाचर के दरबार में स.गु. शुकमुनि से लिखवाया गया था। आचार्य पद की स्थापना से अब अनंतकाल तक अनंतधाम में जाने के लिये मार्ग सुगम किये।

स.गु. निष्कुलानंद स्वामी पुरुषोत्तम प्रकाश ३७ प्रकार से श्रीहरि का शब्दो में वर्णन किये है।

एम आचारजथी कल्याण रे, थाशे सहु, जीवन सुजान रे ।
मानो मोक्ष नो ए छेल्लो उपाय रे, ऐह उपरांत नथी कांय रे ॥

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश और वडताल लक्ष्मीनारायण देव देश की गादी पीठ स्थान उपर अनुक्रम से प.पू.ध.धु. आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज तथा प.पू.ध.धु. आचार्यश्री रघुवीरजी महाराज पदारुढ हुए। अपने स्थान पर उन्हे बैठाकर त्यागी-गृहस्थ सभी के गुरु बनाये और पूजा-अर्चना किये थे।

श्री नरनारायणदेव के मंदिर में सभा मंडप में सर्व प्रथम बार आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज बिराजित हुए। वह पाट प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से स्वामिनारायण म्युजियम में हरिभक्तो के दर्शन हेतु रख दिये है। यह वही पाट है जिस पाट पर आदि आचार्य बैठक रकई वर्षोत्तक सत्संग उत्कर्ष का कार्य किये है। नंद संत भी इस पाट पर विराजित आचार्यश्री का दर्शन-स्पर्श किये है। अनेक हरिभक्त यहाँ बैठकर आशीर्वाद अमृतधारा का लाभ लेकर दुख से मुक्त हुए है। इस पाट पर बैठकर आचार्यश्रीने सत्संग का शुभ ज्ञान फैलाये है।

श्रीहरि इस ब्रह्मांड में पहेली बार आये थे। और गद्दी की स्थापना किये। ये आचार्यश्री सर्व प्रथम पाट उपर बिराजे थे। इस पाटकी तुलना ब्रहमांड में किसी से नही की जा सकती है। इस महा प्रसादी पाट का दर्शन आप लोगो को मिले। इसके बड़ा लाभ कुछ भी नही है। इसकी महिमा पूर्ण दर्शन करते ही मिलता है कि आजभी आचार्यश्री अपने को आशीर्वाद प्रदान कर रहे है।

यह प्रसादीकी पाट स्वामिनारायण म्युजियम में ११ खंड में दर्शन हेतु रखी गयी है। सभी हरिभक्तो महिमापूर्वक दर्शन अवश्य करे।

– प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग यज्ञ की सूची (अगस्त-२०१९)

दि. १६-०८-२०१९ भीखाभाई जोईतारामभाई पटेल - नारणपुर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि अगस्त-२०१९

दि. ०२-०८-२०१९	श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के हवेली की बहनो की तरफ से महापूजा।
दि. ०४-०८-२०१९	(प्रातः) श्री भक्ति महिला मंडल - अमरेली - सुरत (शायं) श्री नरनारायणदेव महिला मंडल - साबरमती, पोर, झुंडाल, वावोल, अंबापुर, धमासणा - अर्चनाबेन सुमनभाई पटेल।
दि. १०-०८-२०१९	श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरेन्टो - केनेडा - ११ पाटोत्सव के अवसर पर।
दि. ११-०८-२०१९	निलाबेन मनहरभाई पाटडिया - नारणपुरा।
दि. १७-०८-२०१९	राजुभाई ललितभाई ठक्कर, वासणा - पौत्री के जन्म के अवसर पर।
दि. १८-०८-२०१९	(प्रातः) श्री स्वामिनारायण म्युजियम आयोजित समूह महापूजा। (शायं) श्री स्वामिनारायण मंदिर दरबारगढ (बहनो का) मोरबी - ह. सां.यो. राजकुंवरबा तथा सां.यो. उषाबा।
दि. २५-०८-२०१९	भरतभाई बाबुभाई पटेल - नवा नरोडा।
दि. २८-०८-२०१९	मगनभाई धरमदास पटेल - डांगरवावाले।
दि. ३०-०८-२०१९	दक्षाबेन संजयभाई सोनी - आम्बली।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-अगस्त-२०१९

रु. ११,०००/-	मोदी अमृतलाल मथुरदास - संकल्प पूरा हुआ - ह. भरतभाई मोदी - साबरमती
रु. ५,०००/-	मीनाबेन के. जोषी - बोपल

धनतेरस दिनांक २५-१०-२०१९ शुक्रवार

प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ हाथो से लक्ष्मीपूजा की जायेगी। पाँच, दस और बीस ग्राम के प्रसादी के सिक्का म्युजियम से मिलेगा।

काली चौदस ता. २६-१०-२०१९ शनिवार

प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से म्युजियम में प्रस्थापित प्रसादी के श्री हनुमानजीका विशेष पूजन दिनांक २६-१०-२०१९ शनिवार के रोज प्रातः ८-०० से ११-०० संपन्न होगा।

संपर्क : श्री स्वामिनारायण म्युजियम : ०७९-२७४८९५९७ तथा

दासभाई मो. : ९९२५०४२६८६, जसुभाई मो. : ९९२४०९०५६६

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

पढ़ने जैसी बात

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

यह है जिंदगी का संपूर्ण समर्पण यह है कुर्वानी ऐसे समर्पण और कुर्बानी की शक्ति के ऊपर धर्म का झंडा लहरा रहा है। तब उसका गौरव जानना यह हमारा कर्तव्य बनता है। पढ़े और एक सत्य घटना प्रसंग बनाना है। अहमदाबाद में। स्वामिनारायण भगवान का वंच में कितने पंत्तो गोमतीपुर में भिक्षा माँगने निकले थे। उसमें से योगेशवरानंद स्वामी वो थोडे वृद्ध थे। और दूसरे दो-तीन संतो ''नारायण हरे सचीदानंद प्रभु।''

बराबर उसी समय असुरो का बड़ा झुण्ड वो भी वही गोमतीपुर में धूमने निकला उसने इन संतो को देखा। और तुरन्त ही बोलने लगा। ओ.....ओहो.....हो। आओ बहुत घण्टो से ईच्छा थी कि तुम्हारे दर्शन हो जाए। खडे रहो। खडे रहो। आपकी पूजा करनी है। डरो नही। डरो नही। आपके ऊपर तो हमे बहुत भाव है। महात्माओ खडे रहो ऐसी कपट वाणी बोलने वाला दुर्जन ने रस्सी से इन संतो को पकड लिया है। पकडकर अपने हाथो से धक्का मारकर ले जा रहा है।

फिर गालियाँ देने लगे। ऐसा लगा कि ब्राह्मण का पाँचवा मुख फट गया हो ऐसी गालियो की बरसात बरसाने गया। खाली गालियाँ देकर चबा लिया हो तो कोई कारण नही था। फिर उसने मारना शुरु किया। वस्त्र खीच लिये कितने तो मटके मारने लगे। अरे कितने तो पैर से तांडव करने लगे। तो कितने लकडीयो से मारना शुरु किया। ये संत क्या करे ? बैठे रहे। तो कितने दुर्जनो कहने लगे कि मारोगे नहि हम एक काम करते है यह दो साधु हाथ में आ गए है। हम हाँ पे बहोत सारे है। आपके बर्तन इन्ही लोगो के पास साफ कराओ। ये सब काम करेंगे। मजूरी कराओ और खाली बैठे तुरन्त ही हाथ-पैर दबवाओ और बादमें एक रुम मे बंद करदो। ऐसी बकवास करने लगे।

दूसरी और खोखरा गाँव की भोगेलो सभा हो रही थी। वहाँ से दोडते हुए संत पहोंच गये और महाराज के सामने सारी बात-चीत करली महाराजने हरिभक्तो की सभा के सामने देखा। और कहा कि अब इन संतो को कौन छुडाकर लाएगा ?

दो जवान हरिभक्त खडे हो गये शिक्षापत्री में महाराजीने क्षत्रिय भक्त के लिए लिखा है कि शूरवीर और धीरज युक्त रहना शूरवीरताओ की साथमें धैर्य चाहिए। धैर्य है वह विचार है शौर्य की बुनियाद है यह दोनो भक्त जनो को श्रीजी महाराज कहते है कि हे भक्त तुम शूरवीर हो तुम साधुओ को छुडाने के लियए खडे हो पर संभाल के आगे बढना।

यह भक्तो अहमदाबाद साबरमती का पानी पीया। अर्थात् तुरन्त ही महाराज की आज्ञा मानकर विचार करने लगे कि महाराजजीने हमे कहा है कि तुम्हारा शौर्य संभालकर आगे बढना अर्थात् जो हम सीधे जाकर शोर्य दिखाएँगे तो हम को कोई पता नही है।

यह दोनो संत छुटने के साथ दौडते – दौडते खोखरा की एक सबा में जाते है। महाराज को बंदन करते है सारी बात बताते है। क्या हुआ था वहाँ पर महाराज कहते है कि आप लोग कैसे छुट कर आए हो। महाराज हम छुटकर आए। ऐसा दिख नही रहा पर दो अंजान व्यक्तियो ने कोई शेठ था। वह वहाँ पर भंडारा करने के लिए आए हुए ते। उन असुर लोगो को भोजन की लालच देकर हमें बंदिश से छुडाया। महाराज ने कहा कि वह देशी न थे। प्रेमी है। महाराज ने बाद में दो हरि भक्तो को सभा में खडा किया। और कहा कि देखो यह कौन है। और संतो मनो-मन उन भक्तो को वंदन करते रहे। प्रभु कहते है कि तुम को छुडाने में इन लोगो का श्रेष्ठ योगदान रहा।

मित्रो जरा शांति से पढना और सोचना तो समझ में आएगा कि अपने सामने जो विरासत है उसका क्या मूल्य है इतना समझ आ जाए तो बहुत है।

जिंदगी को मुशक्लि में रखकर ऐसी कई मुश्किलो का सामना करना पडे। तब ईष्ट देव श्रीहरिने प्रस्तुत किया। ऐसे संतो का उदाहरण याद कराया सहजानंदी सिंह बनकर नियम निष्ठा और पक्ष की के बारे में ढूँड बनकर सच्चा सत्संगी बने रहना।

•

यह कैसी कसोटी ?

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

मित्रो आपने वारिसदार शब्द तो सुना ही होगा । वारिसदार अर्थात् जो संपत्ति के ऊपर खुदका अधिकार कायदेसर हक साबित कर सके तो संपत्ति के बहोत सारे प्रकार है हमे ऐसा भी सुनने मिलता है कि पिता की जमीन संपत्ति पर प्रोपर्टी हो उस पर उनकी संतानो वारिसदार अपने आप बन जाते है । पर एक ऐसी संत्ति है कि जिस पर कोई होदा कि कोई पद की वारिसदार नोंधणी नही कर सकता वह संपत्ति है ज्ञान ।

पिता वैज्ञानिक या डॉक्टर या शिक्षक हो उनके बच्चे उनकी तरह वैज्ञानिक या डॉक्टर या या शिक्षक बने उसके ज्ञान का अधिकांश प्राप्त करना उसके लिए शक्य नही है । बन सकते है पर उसके लिए बहुत महेनत करनी पडेगी । तपस्या और कसौटी में से प्रसार होना पडे तो ज्ञान प्राप्त हो ।

यह जो बात आध्यात्मिक मार्ग पर इतनी ही महत्त्वपूर्ण है । गुरु के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए गुरु की हाजरी में खूब जरुरी है । गुरु खुश होकर शिष्य मे ज्ञान का सर्जन हो उसमें देर लगती नही पर गुरुजी को खुश करना पहले शिष्य कसौटीयो सहन करना या कसौटीयो में से पार उतरने की तैयारी में रहना ।

अभ्यास में तो एक बात रखी होती है कि नित्य कितने अभ्यास क्रम का कोष मं से ही प्रश्न पत्र तय होता है और उसके सही उत्तर दे तो उत्तिर्ण होगें पर आध्यात्मिक मार्ग पर कब कैसे समय कैसी कसोंटी हो उसकी कोई निश्चित पद्धति भी मुश्किली में आ जाएँगे । इसलिए योजना बनाकर संतो को छुडाएगे ।

यह दोनो भक्तो को कही छुपा दिया गया था । काम करना है तो सिर पर जो तिलक लगा हुआ था उसमे मिटा दिया और दौडकर बजार में से रुद्राक्ष की दो-चार मालाए ली और पहन ली । लम्बे कुर्ते पहने हिर कोडी के मालाए पहनी और विचित्र तिलक लगाया और ये जमाने का सेथाडिया जैसे लिखने लगे एक शेढ बना और दूसरा सेठ का मुनिम बना ।

जहाँ पर सब असुर होते है वहाँ पर पहुँच जाते है । उन लोगो में जो आसवान था । वह एक ऊपर की तरफ बैठा हुआ था । वही जाकर हाथ जोडते है । अर्थात् ऐसा लगता है जैसे कोई शेठाडिया आए हुए है । इतने में आवकार देते है । आइए आइए शेठजी कहा रहते हो ? शेठजी कहते है कि हम तो अहमदाबाद में रहते है । भगवान के महेरबानी हो गई है । व्यापार में बहुत लाभ हुआ है । इसलिए मन में विचार आया कि एक भंडारा करवा दुँ । यह देखकर असुरो का आज्ञावान खुश हो गया हाँ.....हाँ अच्छा है ।.... भंडारा करवा दो । आपकी कब ईच्छा है ? धर्म के कार्य में ढील नही छोडनी चाहिए । मन में हो जाए अर्थात् भंडारा में क्या ईच्छा है ? शेठ भी कहते है कि दूसरा कुछ नही काली रोटी, भूरी दाल, मालपुआ और खीर अशुरो को ऐसा लगा कि वाह वाह कल तो खाने में मजा आ जाने वाली है ।

फिर यह दोनो शेठ कहते है कि आइए - आइए यह हमारी जगह देख लीजिए । फिर बाग में अन्दर धूमन लगते है । यहाँ अन्दर एक जगह कोने में दो साधुओ को बाँधकर रखा था । हाथ और पैर पर रस्सी बंधी हुई थी । और वहाँ पर एक व्यक्ति खडा था । उन दोनो भक्तो को देखकर कलेजा काँपने लगा । इतना देखकर गुस्सा आया कि बंदूक साथ में हो तो उन सबके ऊपर चला देता पर तुरन्त ही ईस्ट देवता के शब्दो को याद किया । शौर्य संभालकर रखना अर्थात् एक साथ दोनो जन कहते है "माफ करना हमे भंडारा नही करवाना ।" क्यो ? हमारा नियम है कि यहाँ पर स्वामिनारायण का संत दिखाई दे यहाँ कोई समर्पण नही करना । यह लोग सोचने लगे की अब क्या होगा । यह शेठ तो हमारी तरह स्वामिनारायण का दुश्मन है जो भंडारा और मालपुआ चाहिए तो यह साधुओ को निकाल देना पडे । सब लोग इकठ्ठा होकर यह निश्चित किया । कि इन लोगो को छोड देते है यह संत तो फिर से हम पकड लेगे । यह शेठ तो दुबारा हाथ नही आएगा । और आसवान असुर ने हा नही - नही शेठजी आप जैसा चाहते है वैसा ही होगा । शेठजी के देखते ही दोनो संतो को छोड दिया । भागो यहाँ से ।

फिर शेठजी बोलते है कि अब सही है तो फिर कल का भंडारा पक्का । काली रोटी और भूरी दाल इतना कहकर दोनो शेठजी वहाँ से चले गये । कल किसने देखा है । वे सब मालपुआ खाते है कि मिट्टी की रोटी दूसरे दिन क्या बना किसी नही है । आज हम ऐसी एक छोटी पर उपयोगी बात करेगे ।

एक गाँव में एक मंदिर में एक मंदिर में एक गुरुजी रहते थे । गाँव निवासी और गाँव के आस पास रहने वाले धर्मप्रेमी प्राणी एक समय में गुरुजी के शिष्य की गुरुजी के

भावना होने के रुप में मानते थे । इसलिए एक के बाद एक डाकुओ ने अंदर जाकर कुछ दवाई की उन्होने सारी सेवा करनी शरु कर दी क्योकि अगर वह किसी की भी इसे खोलने दी अनुमती नही देते ये तो वह गुरु पर दवा करते थे । यह धोषमा करने के बाद मेरा देश अब इस वजह से पीडीत नही होगा ऐसे विज्ञापन समुदाय में गाँव के बाहर से हजारो शिष्य आए और एक बडी सभा शुरु हुई बैठक में बच्चे और युवा सभी थे यह ऐसा है जैसे कि आप सबी ने मुझे अब अपने दिल के बिना जीने के लिए कडी मेहनत की है लेकिन ऊपर की तरह एक बात यह है कि मुझे लगता है कि मुझे आपके यह बताना चाहिए कि सभी विषयो में गुलाबी सुनने की खुशी नही है और कहने लगे गुरुजी तुम बात कहो गुरुजी कहे बात ऐसा है कि इस यह खील फटने से पहले कोई इसे ग्रहण कर ले तो में जींदा रह सकता हूँ पर जो खील ग्रहण करे ले तो तुरत ही मौन हो जाएगी ।

सबकी ऐसी इच्छआ थी कि कोई खील ग्रहण कर ले गुरुजी बच जाए पर मरे कौन । ऐसे में एक युवक खडा हुआ यह युवक कहता है कि गुरु देव तुम्हारा खील ग्रहण कर लेता है गुरुजी कहते है कि तुम रहने दो तुम जवान हो यह युवक कहता है गुरुदेव तुम्हारे लिए यह जीवन तो क्या सौ सौ जिंदगी कुर्बान है इतना बोलते ही उसने खील ग्रहण करना शुरु ही कर दिया गुरुजी कहते है बेटा स्वाद कैसा है गुरुजी मुझे तो पक्की हुई आम के जैसे स्वाद लग रहा है । और गुरुजी तो खिलखिलाकर हँसने लगे पुरी सभा में दिखते हुए उन्होने पट्टा खोल दिया और अंदर से पक्की हुई आम निकली पुरी सभामां गुरुजीने बताया की मुझे बहुत दिनो से विचार आता है कि तुम इतना सारे दो इस में से मेरा सच्चा शिष्य कौन ? उसे जानने के लिए मैने इसका प्रयोग किया था । और उससे मुझे पत्ता चला इतने सारे में से एक ही शिष्य मिला है अब में इसे मेरे ज्ञान का वारसदार बनाऊँगा इस तरह गुरुजी द्वारा किया गया प्रयोग में जिस शिष्य को बनाया उसे कृपा किया और उपदेश देकर उन्हे ज्ञान का वारसदार बनाया ।

देखा आपने मित्रो इन प्रयोग को पुरा करने से शिष्य को कैसा फल प्राप्त हुआ जो अपने में गुरु के प्रयत्न और ईष्टदेव प्रत्यय ऐसा सद्भाव प्रगट हुआ तो जिंदगी का सच्चे रहस्यो का ज्ञान होता है । और जीवन धन्य हो जाता है ।

अनु. पेईज नं. ११ से आगे

महेश है । ९३. अमलधाम – जिसका धाम सत, रज, तम से रहित है । वे अमल धामी है । ९४. देव – ये तेजोमय है । दिव्य है । वे देव है । ९५. ज्ञान प्रद सभी प्रकार के जीवो को ज्ञान देने वाले है । वे ज्ञानप्रद है । ९६. अगोचर – जीव इन्हे किसी प्रकार से जान नही सकता है । अगोपर है । ९७. सलूणाप्त – जिसका सहारा मिलने से कल्याण हो जाता है । जो सद्गुणो से पहचाना जाता है । वे सलूणाप्त है । ९८. सहसमूर्ति – जो एक साथ हजारो रुप धारण करने में सक्षम है . वे सहमत्रमूर्ति है । ९९. पुरुष – जो दिव्य अक्षरधाम में पुरुषाकृति धारणक रके रहते है । वे पुरुष है । १००. आकशवपु जिसकी शरीर आकाश की तरह निर्लेप है । मयिक पंचभूत नही है । १०१. आप्तकाल – जिसे कोई कामना न हो । अपने रुप में खुश है । वे आप्तकाम है । १०२. प्रकाशक – अनंत कोटि ब्रह्मांड में जहाँ भी प्रकाश है, तेज हे ज्ञान है । वे आप प्रदान कते हो । ऐसे भगवान श्री स्वामिनारायण भगवान आप के चरणो में हम सभी वंदना करते है । (८)

स्वतंत्र मायाधिप सर्वशक्ते सदा प्रसन्नो भव पाहि चास्मान् ।
त्वमेव सर्वाश्रयणीय एकस्तस्मै मुहुस्ते भगवन्नमोऽस्तु ॥९॥

१०३. स्वतंत्र – चेतन अचेतन सभी जीवो युक्त अक्षर सभी परतंत्र है । केवल परमेश्वर स्वतंत्र है । १०४. मायाधिप – जो जड और चेतन माया है । जगत की उत्पत्ति – प्रलय का कारण है । वे मायाधिपति है । १०५. सर्वशक्ति – स्वयं अशक्त है । सभी को शक्ति देने वाले है । सर्वशक्ति वाले है । १०६. सर्वाश्रयणीय – अक्षरपर्यन्त सभी के आश्रय स्थान है । सभी को सहारा देते है । इसलिये सर्वाश्रयणीय है । १०७. एक – अनंत कोटि में मात्र आज ही है । १०८. भगवान – भग अर्थात् जिसमें ज्ञान शक्ति क्रिया शक्ति, इच्छा शक्ति सदा रहती है । ऐसे ईष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण की में वार-वार साष्टांग प्रणाम करता हूँ । (९)

॥ भक्तिसुधा ॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "नदी जैसा अविरत पालता रहेता और अपनें कर्मो द्वारा सुगंधप्रसराव है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

दों चीजे सोने का सपना देख रही है और जागने की कोशिश कर रही है। केवल यदि कोई कहानी प्राप्त करता है तो उसके लिए प्रयास करा चाहिए। और लक्ष्य की प्राप्ती नही होती तो असंख्य बहाना सोच लेते है। और उने बाहर के कारण ही बन, जाती है। पूरा प्रयास नही करने के लिए एक कार्य हाथ में लेके एक समय सपल नही होगे तो दूसरी बार नही लेता छोड देते है। ऐसा भी कही होता है के भगवान राजी नही तो ऐसा नही करना। ए सृष्टी बनी तब से नदी और पथ्थर के संघर्ष चालु ही है। परंतु नदी अलग होती है इसका रस्ता बना देते है, तो नदी वहेती प्रवाह जैसे चालु होता है। जैसे अपने पर रोकना नही दूसरा जमे ने अपने पेट भराई जातो है। अपने किसी जग्या पहोंचना हो तो दूसरा कोई चलेगा ने अपने पहोंच जाते है। ऐसा नही बना जाना ही पडेगा तो नदी के तरह अविरत पाला रहता और कर्म फलकी आशा नही रखनी भविष्य अपने हाथ की बात नही अपने हाथ की बात एक ही है अपने ही रीत इच्छा से उस रीत कर्म करना सकते है।

अपने कई बार जीवन में कोई भी जग्या पहोचना के लिए नाना रास्ता विकल्प तरीके पसंद करते है के कहाँ से जाऐ क्या करे के जल्दी पहोच जायेंगे इसलिए अपने भगवान के पास और महापुरुष के पास वरदान की इच्छा रखते है। और मनुष्य शाप से डरने लगता है। पर वरदान है। तो कभी भी शाप परिवर्तीत होता जाता है। जिसकी खबर पडती नही है। और कई बार शाप फल वरदान परिवर्तीत होता जाता है। राहु और केतु अतः उन्होने अमृत का पान किया तो भी उने शाप रुप शक्ति होता है और शंकर भगवान है उन्होने भी विष पिया तो भी महादेव कहलाते है। तो कहने का आशय है के अच्छा विचार हो तो और ज्ञात अच्छा होता है।

बरसात का बुंद केला के वृक्ष के पते के उपर पडे तो कपूर बन जाता है। यदि आप एक नही सीट पर आते है तो आप मती बन जाते हे हौ आर यदि आप अपने मुंह में गिर जाते हे तो आप बीस हो ही जाते है। पानी में कोई बदलाव नही होता है। अगर एक बुंद किसी ऐसी चीज में दब्दील हो जाती है जो उससे आर्कषित होती है तो हम इंसान हो। यदि हम कबावपूर के समान सुगंधित होना चाहते है, तो हम अपने विचारो के संबंधके समान ही जाते है हमारे जिवन ऐसा हो जाता है की जैसे हम चंदन के पेड पर काम कर रहे है तो चंदन के पेड का फल नही पैलता है। यदि हमारे पास इस तरह से मजबूत आत्म सम्मान है कि हम हार नही मानते है तो साध्यर्य हमें खराब नही कर सकता है। कोई फर्क नही पडता कि सज्जन व्यक्ति के साथ क्या है, हमेशा एक अच्छा आदमी बनने का संघर्ष यहा तक कि जीवन में भी जब आपके पास बुरा समय होता है तो सब कुछ भुला दिया जागा और यह आपकी मदद करेगा कि सज्जन व्यक्ति जाता है जब दुष्ट आदमी आके शरीर में आपको अतिरिक बना देगा जो आपको एक मेदान पथ पर ले जाएगा। और जीवन में जो सुगंधहम करते है वह हमारे जीवन को भी बदल सकती है सत्य सत्य एक दूसरे का पूरक है। सीताजी सदा मेरे मन में आई और उन्होने देखा कि जटायु को रावण ने भगाया था जो उन्होने सीताजी को बचाने के लिए हर दिन किया था। यह एक कार्य था क्योंकि कोई समपने में आया था तो उसे करना था। ठीक उसी तरह जैसे भगवान राम की सांस लेना आत्मरक्ष और आत्मरक्षा या दूसरे आश्रम और पिता की सुरक्षा। यह समय की मांग है क्योंकि अराजकता का अभ्यास करने और असहाय आदमी को परेशान करने के साधन शीतलन के लिए सबसे बड़ी असुविधा और आक्रामकता है। लेकिन आख्रामकता क्रोधहै। अगर वह गलत है तो जीवन में अच्छे काम करने के अच्छे सकारात्मक विचार सुगंधकों पार कर सकते है और हमारी आत्मा को भी

सुंदर बना सकते है। और कुछ नही किया जा सकता है तो फूल का उपयोग तम्बु बनाने के लिए किया जाता है यह जिस तरह से हम एक गिरे हुए आदमी कों श्रद्धांजलि देते थे। लेकिन हमारे हाथो की बात नही करना हमारे हाथों की बात करना है कि जीवन में उस स्थान का खोजना है जिस तरह से व्यक्ति सुंदर नही है। अंदर की सुगंदरता बाहर पर सुंदर की कीमत के लायक नही है। इलिए बात को कायम रखना है।

अन्यथा हमें लगता है कि हमे अब कुछ करने की आवश्यकता नही है हमारा ज्ञान संक्षारक है। तो मेरे लिए भी हम आपके सभी सामानो को रखते है और जो भरा जाता है। उससे निकालते है लेकिन जितनी जल्दी हो सके लेकिन कोई फर्क नही पडता कि में कितना अच्छा हूँ यह जल्दी नही है क्यों कि मस्ती में जमीन का एक टूकडा है। यहि दम शीर्ष पर अच्छे नही है तो यह इस हद तक जाता है। कि यह भूमि के कब्जे को कम करता है। और अच्छी तरह से एक है और आ सकता है। सब कुछ सच हो जाएगा। अगर मेरे कुछ भी होगा तो जब यह होता है। जन आप कभी भी अपना खुद का नही जानते है तो जीवन में हमेशा अच्छा काम होता है।

•

मनुष्य जन्मनुं कर्तव्य

– सांख्ययोगी कोकिला (सुरेन्द्रनगर)

मानव का जन्म लाखों रुपो में से होता है और इसका उपयोग केवल इस मानव जन्म को कईलोग के लिए सार्थक बनाता है। यदि कोई निरुसाहित हों जाता है तो ईश्वर की पूजा और सत्संग करने से महामानव को फिर से शरीर नही मिलता है। लगा तार पछता रहे है।आत्म को श्रेय करने का शमझातु नही अचानक कान आके खडा रहेगा तब इसके जीवन में प्रस्तावाने बारी नही आती तो उसके लिए करोडो काम बीगाड के भी एक मोक्ष सुधार लेना जीवन में करने जैसा काम कार्य हो तो और न करना हो, ऐसा मनुष्य को केवल तभी सार्थक माना जाता है। जब वह काम नही करता है, उनका मानना है कि विषय के सूक्ष्म जीवो ने लाभ उठाया है लेकिन उन्होने नाशवान जीवन पर लाखो लेखन का उपभोग किया है लेकिन अपना आकर्षण नही खोता है। जैसे की एक दुबला मवेशी आदमी अपने रास्ते पे चलता है भगवान दुबले होते और कुछ लोको को समझा जा सता है कि आज का युग का स्वभाग भेंस जैसा है। यदि विषय के पास आत्म निसर्जन के जाने के समय है जो कुछ भी वह अपने सिर में पाता है तो उसेप्‌रभु के स्त्रोतो को याद रखना चाहिए जैसे ही ट्रेनटेशन पर आती है वह दर जिस पर आप अपना किराया देते है आदि इससे पहेल की में आज्ञानी से इससे दूर हो पाता मैने अपना जिवन भक्ति और साहित्य मे बना लिया एक बेवकूफ के रुप में अपने आत्म वंचित काम को एक स्कूल शुरु करने जैसा है। लेकिन उनका पूरा जीवन लगातार यह सुनिश्चित करने की कोशइश कर रहा है। कि उनके रिश्त दारो को गलत महशूश न हो लेकिन उन्होने ऐसा अमूल्य मानव शरीर दिाय की भगवान को जीवन जीन के लिए गलती नही करना चाहिए। इसलिए भक्ति सत्संग परायण है।

यदि आप रेडियो स्टेशन में होने के बाद रेडियो चालू करते है तो आफीक इसके बारे में सुनाई नही देगा इसी तरह यह ऐसा ही है मेरे जाने के बाद बूंदे आदमी में लियो खुलता है आपका स्टेशन बंद होने के बाद भी भजन को खुद से बात करनी चाहिए।

फिल्म शो में द रुणु आते ही थियेटर छोड देती है। परमाणु दिखने वाले समुंह तट हिलने लगते है। शाम ढलने पर पक्षी धोसले में लौतने लगते है। सिर पर सफेद बाद गिरने से पहेल मन को फिर से हरिभजन में शामिल होने की कोशिश करनी चाहिए नही तो वह कल आयेगा और पतला रहेगा इससे लम्बा समय नही लगेगा एक चुहे ने किसान के घर में एक बस्सा खीचा ताके वह थेले से बहुत सारा समान देखकर खुश हो जाए मेरे साथ क्या गलत है, फिर यह देखकर कि बिल्ली चुपचाप चली गई है और उसके मुंह में पहुंच गई और पाचन हो गई भलें ही हम जितना प्लान कर चुके हो उससे ज्याद तो नही लेकिन जीवन खुद लंबा नही होता लेकिन इसे पाने में देर नही लगती विचारो इस सयम दुनिया के मंत्री की भक्ति केवल मनुष्य के लिए जन्म स्थान हो सकती है। जब भजन याद नहि किया जाता है तो भाई भाई होता या भाी पीडित या त्याग किया जाता है जब भगवान कों भुला दिया जाता है, तो दुनिाय में या दुनिाय में जो सामान है, वे भगवान में नहि मिलते है। केसर चंदन से भरी कटोरी पर बैठने के बजाय पट्टान, पर मखिया बैठी है। क्यों कि इसमें चंदन की तुलना में गंदगी ज्यादा होती है हमारा दिमाग मूर्ति और पांच में पंस जाता है। यदि हम ईश्वर की पूर्ण महिमा को

नही समझते है तो आत्मा को ऊपर उठा दिया जाता है। ताकि असह्य के सुख में वृद्धि हो। संसार के मंत्री ने दिया और दिया में भर दिया लेकिन सत्संग भी प्रदान किया ताकि जन्म और मृत्यु का वापस जन्म न हो।

यदि कोई इंद्रियो और वर्षो में नही रहना चाहता है तो हरि गाँव जाने की बात राज की आवाज में नही आती है। कि नेपाली प्रेम एक विषय है। मैदान के बाल होते हुए भी बच्चें दरवाजे की शैलाब कां ठीक करके अंदर आते है। यदि उनके बाल होते है तो इससे इंद्रियो गिर जाती है। जिससे बाल गिर जाते है। संत का संभोग, करना मायाका ऐसा बल है। किसानो को फसल के बाद खेतो में एक कमरे में निगलने के अलावा, प्रभु के अलावा सर्वेक्षण की निंदा की गई है। प्रतिस्थापन दो बार किया जाना चाहिए। जितत्तना आपको करना चाहिए नवारा इतना गिर गया कि वह मंदिर में जाकर प्रभु के दर्शन कर सकता था लेकिन कोई झटका नही लगेगा।

इसलिए आज प्रश्न यह है कि मैं और अधिक सफलता के साथ प्रभु से प्रार्थना करुं महाराजा भगवान की तलाश में गए है चाहे वह सच हों या न हो जिस हृदय की सुलभता है वह यह है कि आज दूद जमीन पर पडा है भलें ही भगवान और आचार्य महाराजजीने में विश्वास नही करते है लेकिन यह अक्षरधाम है। इससे मेरे लिए एक हवेली रखना आसान हो गया है जो कि भगवान की पूजा के लिए बंद है। शिक्षा जीवन का सत्य है। इसके विरुद्ध यह लिखा जाात है कि, कुछ काम इस काम के लिए मापने नही रखते भगवान दयालु ताकी प्रभु अभी तक पुनः, प्राप्त करने के लिए वापस नही आएंगे सच तो यह है कि गाँधी संत लगभग युगों तक रहे है लेकिन उनमें से कितने लोगो ने इस वस्तु छोडा है या यह सोचा है कि यदी कुछ भगवान में बन गए ? अब मुझे मौसम की वेकार भक्ति भूजा से जोडो इंसान को संतोष में परिपूर्ण बनाया जा सकता है।

•

सेवानो प्रताप

– लाभुबेन मनुभाई पटेल (कुंडाल, कडी)

गाँव मालिया में घर सुदामा जैसी दयनीय स्थिति में था उनके पास इन लोगों की संपत्ति नही थी। लेकिन दैवी सम्पदा धनी ज्ञान वैराग्य दया संतोष, आदि गुणों सें भरपूर थी। जब गाँव में संत पहुंचते है तों वे एक अजीब कहानी पर पहुंचते है ! मेरें पास सांति से संतो की सेवा करने के लिए पैसा नही है मसाल उज्जवल है। हमेशां मीठे मीटे छाछ और अचार के साथ अछार के रुप में लंबे समय तक परोसा जाता है। जब जी स्वामी महाराज दिव्य में आए तो जय स्वामिनारायण ने बहुत प्रसन्न होकर क्या किया ? महाप्रभुजी स्वामी नारायण आझ गरीब आदमी की किताब से रोमांचित हों गए और एक टूटे हुए निरन्तर पर एक पलंग रुढाने का आशीर्वाद दिया। श्रीजी महाराज उस बैठ गए भगवान के चरणों मे गाए गए दौ हाथ और दो कीर्ति कीर्तन है। स्वामिनारायण के मिलने पर पूर्त का प्रण्य प्रकट हुआ काम पूरा होने पर निरव मोहन ने देखा श्रीजी महाराज ने कहा कि आप बदले में हमारे संतो को मक्खन और अचार देतें हौ आर आप उन्हें क्या देते हैं। यह वांदनीय है कि भक्त को धन और संपत्ति देना चाहिए कहाँ कि तुम क्या चाहते है। महाराजा को नाशवान धन की कोई इच्छआ नही है मैं कडी मेहनत करता हूँ और आपकों खुशी के साथ याद करता हूँ है प्रभु यदि यह प्रसन्न हो, तो मुझे अपने रथ पर ले चलों तैयार हे हालांकि हम एकादशी के दिन आपके पास आएगे उसकी पत्नी से बात करे और जब में गाँव जाउं तो उसकी पत्नी को बताउं हर दिन में छाछ बनाती थी। इसलिए प्रभुजी से कहता हूँ कि मुझे भी धर्म पसंद है। श्रीजी महाराज एकादशी के दिन वह घर में टूट गया और जगते दिन वह अपनी पत्नी के घर में घुस गया। यह सेवा की महिमा हे भले ही यह गीत जंगल में रखने के लिए किया गया ही प्रतीक प्रभु द्वारा नही देखा जाता है। लेकिन आज यह प्रभु द्वारा कोला गया है। यह सहजानंद स्वामी के अवतार का अवतार है। पहचाने कि उसका रास्ता स्त्रैण है लेकिन हम सभी चीजो को कैसे एक कीमत पर नही फेंककर जीवित रखते है। महामाया मेरा – तुम्हारा – ध्यान – ध्यान जब्ती बेठा है।

आज मोरी कुटिल और जंगली होने के बिन्दु पर जीवित है। अक्षरधाम की बाते बहती रही है लेकिन ध्यान रखे कि हम कैसे धाम जाएंगे हरि में हरि के साथ हरि में हरि मुख में हिर मूर्ति में कान में पुष्पांजलि में प्रणाम में और हृदय में अगर कोई धर्म जाता है तो वह धाम जाएगा।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की भव्य निर्माण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा सें एवम् प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से वह समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से हो रहा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेवना शुभ सानिध्य में श्रावण वद-८ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की रात ९ से १२ दरम्यान मंदिर की प्रसाद की चोक में सुंदर भव्य जलाया हुआ समियाणा अपने गायक वृंदना परेश होता, ओम सोनी आदि कलाकारो ने ब्र. स्वा. मुकुंदानंदजी आदि संतो ने नंद संतो के रचित कीर्तन की हेली बरसात की थी। रास - गरबा भी धामधूमथी होता हुआ था। शहेर के अनेक विस्तार कें हजारो हरिभक्तो दर्शन के लिए आयें थे। अद्भूत और भव्य उत्सव कों मनाते मनाते रात को १२-०० बजे श्रीकृष्ण जन्म उत्सव की आरती हुई थी। जिसमें हजारो भक्त दर्शन करके धन्य धन्य हुए थे।

सब भक्तोने सुंदर मजा का पंजीरी का प्रसाद बेचने आयें थे समग्र प्रसंग में स्वा. हरिचरणदासजी, जे.पी. स्वामी, कोठारी जे.के. स्वामी, शास्तरी मुनि स्वामी, योगी स्वामी और भक्ति स्वामी और हरिभक्तों ने सुंदर आयोजन किया था।(कोठारी शा. नारायणमुनि स्वामी)

अयोध्या श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाया

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर अयोध्या खाते श्रावण वद-८ ना श्री कृष्ण जन्मोष्टमी धामधूम से मनावाया रात को १२-०० बजे श्री कृष्ण जन्मोत्सव आरती में यात्रि को और अयोध्या का स्थानिक भावि कों दर्शनार्थे पधार्या है। दरेक भक्तोंने पंजीजीरी और फ्रुट शिरानो प्रसाद बाँटने के लिये आये थे। जिसके यजमान प.भ. डॉ. पी.सी. तिवारी साहेब (लखनऊ) रहे थे। महंत स्वामी देवप्रसाददासजी और पने पार्षद और स्टाफें सुंदर आयोजन किया था।(बुटीयाभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा एवम् प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल खाते सर्वोपरी श्री घनश्याम महाराजने स.गु. महंत स्वामी ध्यानप्रियदासजी (बावला) और महंत स्वामी धर्मसुतप्रियदासजी (बोपल) से पुष्पाभइषेक कर सुंदर दर्शन कराया था।

ता. १२-८-१९ से १८-८-१९ पर्यंत ज्ञानसत्र कराया था। जिस में स.गु. महंत स्वामी ध्यानप्रियदासजी (बावला) सें श्रीमद् सत्संगिजीवन ग्रंथनी कथा सौ हरिभक्तोने संभाली थी। अत्रे मंदिर में सत्संग की सुदंर प्रवृत्ति होता है। श्रावण आदमी भव्य हिंडोला करते आये थे।(प्रविण उपाध्याय)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुरधाम बहेनोना

जेतलपुरधाम निवासी श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की कृपा एवम् प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्रीना आशीर्वाद से. पू. गंगाबाना राधाकृष्णदेव सांनिध्य में पवित्र श्रावण मास में पूरा महिना बहेनो के मंदिर मेंस .गु. निष्कुलानंद मुनि रचित हरिस्मृति ग्रंथनी कथा सां.यो. नर्मदाबा गुरु सां.यो. बचीबा की वक्ता पदे विस्तार से सुमधुर शैलीमें किया था। जिसके लाभ ले रहे जेतलपुर तथा आजु बाजुनां गाम बहेनो खूब धन्य धन्य हुए थे।(सां.यो. संगीताबेन - जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर असलाली बहेनोना मंदिरमां पंचान्ह पारायण

जेतलपुरधाम निवासी श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की कृपा एवम् प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री के आशीर्वादथी हुआ जेतलपुर के सां.यो. १९ थी २०-८-१९ सुधी असलाली बहेनोना मंदिर में सब के साथ प्रसाद लिया था।

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में जन्माष्टमी की समैया उल्लास पूर्वक मनायी गयी

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराजकी कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रावण मास वद-८ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की समैया अधिक उल्लास के साथ मनाई गई। श्रीहरि की कृपा से समस्त मूली देश के गाँवो में अच्छी वर्षा हुई। हरिभक्त अति खुश है। सभी लोग जन्माष्टमी के समैया अवसर पर आये थे।

स.गु. ब्रह्मानंद सभा मंडप में श्रावण मास में स.गु. शास्त्री स्वामी घनश्याम स्वामी पूरे मास श्रीमद् भागवत की कथा कहे थे। जिसकी पूर्णाहुति आरती संत हरिभक्त में किया। रात को १२ बजे श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की आरती पू. महंत स्वामीजी किये थे। हजारो हरिभक्त श्रीकृष्ण जन्मोत्सव का दर्शन करके भाव-विभोर हुए। समस्त प्रसंग के अवसर का प्रबन्धपू. स.गु. महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से कोटारी स्वा. हरिकृष्णदासजी, कोठारी व्रज स्वामी तथा पार्षद भरत भगत आदिने सुंदर सेवा दिये थे। (कोठारी स्वामी - मूली)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर एलन टाउन सत्संग सभा

श्री नरनारायणदेव की कृपा से श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने एलन टाउन (वडतालधाम) श्री स्वामिनारायण मंदिर विकेन्ड में शनिवार की सांज के ५ से ८ दरम्यान सत्संग सभानुं आयोजन करने आया था। जिस में सौ प्रथम श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून भजन कीर्तन किया था। त्यार बाद डी.के. स्वामी ने भगवान लीला चरित्र की कथा संभालनी थी। सभा में सेवा करनार सबका सन्मान करने में आया था। अंतिम जन मंगल पाठ श्री हनुमान चालीयाना पाठ और ठाकोरजी को थाल नित्य नियम करी सभा के साथ प्रसाद लीया था। (प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन (अमेरिका)

श्री नरनारायणदेव की कृपा से श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने विहोकन श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रावण मास में ठाकोरजी ने अवनवा सुंदर हिंडोळा बना के झुलाया था।

श्रावण मास में श्री हनुमान चालीसा की कथा स.गु. स्वा. पूर्णानंदजी (जेतलपुर)ना वक्तापदे हुआ था। इस प्रसंग जेलपुरधामना पूज्य महंत स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकासदासजीने सौ हरिभक्तो ने सुंदर आशीर्वाद देकर खुश किये थे। दोनो संतो ने यहाँ हरिभक्तो कथा वार्ता करी खूबज राजी किया था। (प्रविण शाह)

सास्काटून केनेडा में आई.एस.एस.ओ. श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव

परमकृपाल श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से केनेडा के सुंदर रमणीय क्षेत्र सास्काटून में रहने वाले हरिभक्त और अमेरिका आई.एस.एस.ओ. के प्रयास से अपना भव्य मंदिर बना है। प.पू. आचार्य महाराजश्री का यहाँ के मंदिर हेतु संकल्प था। जो सर्वोपरी श्रीहरिने पूर्ण किया।

ता. १६-८-१९ से १८-८-१९ तक मूर्ति प्रतिष्ठा के

अवसर पर श्रीमद सत्संगिजीवन कथा स.गु. शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजी गुरु शा. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) के वक्ता पद से हुई थी । जिसके प्रारम्भ में भव्य पोथीयात्रा भजन-कीर्तन करके हुआ था । बाद में अखंड महामंत्र धुन की शुरुआत हुई । यज्ञ का शुभारम्भ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ जेतलपुर से पू. शा. पी.पी. स्वामी आई.एस.एस.ओ. प्रेसि. प.भ. जगदीशभाई पटेल, कोषाध्यक्ष प.भ. देवराजभाी केराई, प.भ. बड़े भगत (शिकागो) आदि कई भक्त उपस्थित थे । ता. १७-८-१९ के दिन प्रातः समूह पूजा प्रारम्भ हुई । जिस में कई हरिभक्तने भाग लिया था । सायं प.पू. महाराजश्री के करकमलो से सेवा करने यजमान का सन्मान किया गया था । रात्रि के शुभ मुहूर्त में ठाकुरजी के मंदिर में उत्साह पूर्वक स्थापन किया गया ।

बच्चो और बच्चियो द्वारा सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया । ता. १८-८-१९ के दिन कथाकार योगेन्द्रभाई भट्ट द्वारा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ हाथो द्वारा श्री घनश्याम महाराज श्री नरनारायणदेव श्री लक्ष्मीनारायणदेव और पंचदेव की मूर्ति प्रतिष्ठा वेदोक्त विधिसे हुई थी । अन्त में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद प्रदान किये थे ।

इस के बाद उत्सव की समाप्ति और अन्नकूट की आरती किये थे । पूरे मंदिर का निर्माण कार्य जेतलपुर मंदिर के पू. शा. पी.पी. स्वामी की देखरेख में हुआ । पूरे उत्सव में स्थानीक तथा टोरन्टो एडमिन्टन स्वयं सेवकने प्रेरणात्मक सेवा किये थे ।

इस अवसर पर योगी स्वामी (बोस्टन), माधव स्वामी (एडमिन्टन), शा. आशिषभाई और रजनी महाराज हाजिर थे । श्रीकृष्ण जन्मोत्सव रात को १२ बजे आरती उतारे थे । (हरिभक्त समस्त सास्काटून हिन्दु स्वामिनारायण मंदिर)

दीपोत्सव कार्यक्रम

आश्विन शुक्ल-९ मंगलवार दि. २२-१०-१९ को पुष्य नक्षत्र होने से हिसाब लिखने के रजिस्टर खरीदने का मुहूर्त अच्छा है ।

धनतरेस : आश्विन कृष्ण-१२ शुक्रवार दि. २५-१०-२०१९ सायं १९-०८ से धनतेरस महालक्ष्मी पूजन ।

काली चौदश : आश्विन कृष्ण-१३ शनिवार दि. २६-१०-२०१९ दोपहर ३-४६ से काली चौदश कालुपुर मंदिर श्री हनुमानजी महाराज का पूजन सायंकाल ७-०० प.पू. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा किया जायेगा ।

दीपावली : आश्विन कृष्ण-१४ रविवार दि. २७-१०-२०१९ समूह शारदापूजन-चोपडा पूजन सायंकाल ७-३५ बजे अमदावाद कालुपुर मंदिर के सभा मंडप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से विधिवत संपन्न किया जायेगा ।

नूतन वर्ष : आश्विन वद ३०/१ सोमवार दि. २८-१०-२०१९, गोवर्धन पूजा

मंगला आरती प्रातः ५-00 बजे ।
शृंगार आरती प्रातः ६-३0 बजे ।
अन्नकूट रचना (दर्शन बंद) प्रातः ९-१५ से १२-00 बजे तक ।
राजभोग आरती प्रातः १२-00 बजे ।
अन्नकूट दर्शन दोपहर १२-00 बजे से ३-३0 बजे तक ।

श्रीहरि के छट्ठे, ७ वें तथा ८ वें वंशज के हाथों से संपन्न होगा । नूतन वर्ष को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कालुपुर मंदिर में अपनी आफिस में सभी को दर्शन देंगे ।

सूचना : समूह शारदा पूजन में लाभ लेने वाले भक्त अपनी बही लाल कलर में कपड़े में पता-फोन-मोबाईल नंबर लिखकर मंदिर की आफिस में ४००/- रुपये भरकर रसीद प्राप्त करलें ।

(श्री कमलेशभाई गोर)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

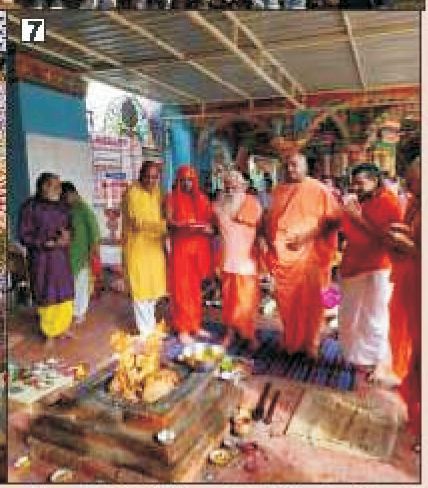

(१) सिनेमीन्सन (अमेरिका) मंदिर में पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक दर्शन। (२) सिनेमीन्सन (अमेरिका) मंदिर में श्री कृष्ण जन्मोत्सव उल्लास से मनाया गया। (३) सिडनी (ओस्ट्रेलीया) मंदिर के १५ वे पाटोत्सव अवसर पर समूह महापूजा में लाभ लेते हरिभक्त। (४) हमारे आई.एस.एस.ओ. "सेवा" द्वारा युगांडा में सेवा कार्य। (५) लुइसविल (अमेरिका) मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक दर्शन। (६) अहमदाबाद मंदिर में गणेश चतुर्थी को श्री गणपतिजी के समक्ष अन्नकूट दर्शन। (७) कांकरिया मंदिर में श्रावण मास में लघुरुद्र यज्ञ में श्रीफल चढाते कांकरिया के संत मंडल तथा अहमदाबाद मंदिर के कोठारी जे. के. स्वामी।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

1

2

3

(१) सास्काटोन (कैनेडा) मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा दर्शन करते हरिभक्त । (२) विहोकन (अमेरिका) मंदिर में ठाकुरजी के सामने सिक्के का हिंडोला दर्शन । (३) हमारे करांची (पाकिस्तान) मंदिर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी को मनाते हरिभक्तो समुदाय (तसवीर हरिश भारवा)

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसाजी महाराजश्री का ४७ वाँ प्राकट्योत्सव

विजया दशमी (दशेरा) दि. ८-१०-२०१९ मंगलवार ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में धामधूमसे संपन्न होगा ।

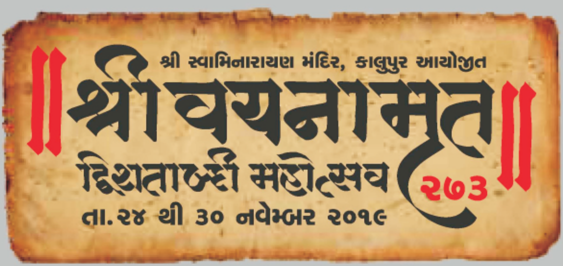

केलन्डर - २०२०

कालुपुर मंदिर द्वारा श्री नरनारायण देव और बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराजका २०२० के आकर्षक केलन्डर प्रकाशित होने वाले है । आप मीनीमम २५० केलेन्डर में अपने वाणीज्यका विज्ञापन दे शक्ते है ।

संपर्क :- अतुल पटेल ९८२४० ३३२७५ और कौशिकभाइ:- ९६६२०३०८२९

Daily Darshan Whatsapp no. **+91 9909 967104**

www.swaminarayan.in info@swaminarayan.in

Follow Us @ nndkalupurmandir

Praful Kharsani